हिमाचल की प्रगति एवं संस्कृति का दर्पण

गिरिराज

साप्ताहिक

Mkd iath dj.k la[;k ,p-ih-@42@,l-,e-,y- 2009 lkIrkfgd vkj-,u-vkbZ- 32195@78

o"kZ 31 vad 52 f'keyk] 30 flrEcj&6 vDrwcj] 2009 gj c/kokj dks çdkf'kr eY; % ,d izfr 3-00 #i;s okf"kZd 140 #i;s vkthou 1500 #i;s website : himachalpr.gov.in/giriraj.asp

घर बैठे गिरिराज पाइये

गिरिराज का आजीवन ग्राहक बनने के लिए सदस्यता शुल्क 1500 **रुपये** बैंक ड्राफ्ट या मनिआर्डर के माध्यम से **निदेशक, सूचना एवं जन सम्पर्क, शिमला**-2 व वार्षिक सदस्य बनने के लिए सदस्यता शुल्क 140 **रुपये, सम्पादक, गिरिराज साप्ताहिक, शिमला**-171005 के नाम से भेजे।

ir s e s fiu dkM ,o

njHkk"k ;k ekckby u- fy[kuk u Hkwys

इस अंक में

कृषि/बागबानी/विकास...	5
आस्था/संस्कृति/विविध...	6
विविध...	7
साहित्य...	8
महिला/बाल जगत/स्वास्थ्य ...	9
पहाड़ी पृष्ठ	10

प्रशासन जनता के द्वार कार्यक्रम पुन: आरम्भ

राज्य सरकार द्वारा हाल ही में 'प्रशासन जनता के द्वार' कार्यक्रम को पुन: आरंभ करने के फैसले के बाद मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने गत दिनों इस कार्यक्रम की पहली कड़ी में हमीरपुर जिला मुख्यालय से करीब 13 किलोमीटर दूर टौणी देवी में लोगों की समस्याएं एवं शिकायतें सुनी। जिले के विभिन्न भागों से आये लोगों ने अपनी व्यक्तिगत तथा क्षेत्र की समस्याएं लेकर उनसे भेंट की। मुख्य मंत्री ने यहां करीब 500 लोगों की समस्याएं सुनी।

मुख्य मंत्री ने विभिन्न विभागाध्यक्षों को उनके विभाग से संबंधित शिकायतें एवं समस्याएं उचित निर्देशों के साथ निवारण के लिए सौंपी।

मुख्य मंत्री ने इस अवसर पर उपस्थित अधिकारियों एवं लोगों से कहा कि इस कार्यक्रम के पीछे सरकार की सकारात्मक सोच है और प्रदेश की भौगोलिक परिस्थितियों को मद्देनजर रखते हुए सरकार ने लोगों की समस्याओं के समाधान के लिए स्वयं उनके घर-द्वार तक पहुंचने का निर्णय लिया है। लोगों को अपनी समस्याओं के समाधान के लिए प्रदेश, जिला, उपमंडल, खंड या तहसील मुख्यालय तक जाना पड़ता है, जिससे उन्हें काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इससे उनके समय एवं धन दोनों का अपव्यय होता है। उन्होंने कहा कि अपने पिछले कार्यकाल के दौरान उनकी सरकार ने यह योजना आरंभ की थी। परंतु पूर्व सरकार ने इसे बंद कर दिया था। उन्होंने बताया कि योजना के तहत एक ही स्थान पर तमाम विभागाध्यक्ष, जन प्रतिनिधि, उपायुक्त या एसडीएम की अध्यक्षता में एकत्रित होते हैं और आयोजन स्थल पर ही समस्याओं का समाधान करने के प्रयास किए जाते हैं। कई बार जिन कुछ समस्याओं का समाधान नहीं हो सकता है, उसके बारे में आवेदक को पर्याप्त जानकारी दे दी जाती है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश के बाकी स्थानों पर भी ऐसे कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

प्रो. धूमल ने कहा कि इस योजना के लागू होने से लोगों को सरकार की ओर से दिए जाने वाले हिमाचली होने संबंधी प्रमाण पत्र, एससी/एसटी/ओबीसी प्रमाण पत्र, आय प्रमाण पत्र, राजस्व रिकार्ड से संबंधित दस्तावेज तथा (शेष पृष्ठ 11 पर)

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल मंडी जिले के घन्यारी में देव भंगरोई उठाऊ पेयजल आपूर्ति योजना का शिलान्यास करते हुए

चैलचौक में विनियमित उपमंडी का लोकार्पण

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने प्रदेश के किसानों तथा फल उत्पादकों की आर्थिकी को सुदृढ़ करने की अपनी सरकार की वचनबद्धता को दोहराया है। मुख्य मंत्री गत दिनों मण्डी जिला के चैलचौक में 1.60 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित विनियमित उप मंडी (रैगुलेटिड सब मार्किट) के लोकार्पण के बाद एक विशाल जनसभा को संबोधित कर रहे थे। इस मण्डी के बन जाने से सीराज, जंजैहली, सुन्दरनगर, बल्ह तथा करसोग क्षेत्र के किसान तथा फल उत्पादक लाभान्वित होंगे । उन्होंने 2.97 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत से निर्मित होने वाली देव बंगरोई उठाऊ पेयजल आपूर्ति योजना की घन्यारी में आधारशिला रखी। इस परियोजना के पूरा होने से क्षेत्र के लगभग 4000 लोग लाभान्वित होंगे।

बाद में, मुख्य मंत्री ने बासा में एक जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि सरकार का प्रयास प्रदेश के सभी स्थानों पर विनियमित मंडियों के निर्माण करने का है, ताकि किसानों को उनके घरों के समीप ही उनके उत्पाद के उचित मूल्य मिलेंगे। प्रो. धूमल ने कहा कि प्रदेश के किसानों की सुविधा के लिए राज्य में 353 करोड़ रुपये की है, जिसपर लगभग 100 करोड़ रुपये व्यय किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार के आग्रह पर भारत सरकार ने क्षेत्र के लिए एक भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई.आई.टी) भी स्वीकृत किया गया है।

- **जल प्रबंधन योजनाओं के लिए 140 करोड़ स्वीकृत**
- **जोगिन्द्रनगर-सरकाघाट-घुमारवीं सड़क को द्विमार्गी बनाने पर 14 करोड़ व्यय होंगे**
- **जंजैहली चैलचौक सड़क के सुधार के लिए 22 करोड़**

पंडित दीनदयाल किसान बागबान समृद्धि योजना कार्यान्वित की जा रही है। मण्डी जिला के विकास की चर्चा करते हुए मुख्य मंत्री ने कहा कि मण्डी में एक मैडिकल कॉलेज खोला जा रहा

वैश्विक उष्मीकरण पर चिंता व्यक्त करते हुए प्रो. धूमल ने कहा कि सरकार द्वारा जल प्रबंधन को विशेष प्राथमिकता दी जा रही है तथा 361 करोड़ रुपये की एक योजना वित्तपोषण के लिए केन्द्र को भेजी गयी है। उन्होंने कहा कि इस योजना के अंतर्गत भारत सरकार द्वारा 140 करोड़ रुपये स्वीकृत किए गए हैं, जिसमें 12.70 करोड़ रुपये मण्डी जिले में व्यय किए जाएंगे।

मुख्य मंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार द्वारा 102 करोड़ रुपये की 51 सड़क योजनाएं भारत सरकार को स्वीकृति के लिए भेजी गयी हैं, जिसमें से 28 योजनाएं स्वीकृत की जा चुकी हैं जबकि शेष स्वीकृति के विभिन्न चरणों में है। प्रो. धूमल ने कहा कि जोगिन्द्र नगर-सरकाघाट-घुमारवीं सड़क के सुधार एवं इन्हें डबल लेन करने पर 14 करोड़ रुपये तथा जंजैहली- चैलचौक सड़क के लिए 22 करोड़ रुपये व्यय किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि 2 डडौर-गोहर सड़क के लिए 2.5 करोड़ रुपये तथा (शेष पृष्ठ 11 पर)

कर्मचारियों व पेंशनरों को महंगाई भत्ते की किस्त जारी

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने गत दिनों प्रदेश के कर्मचारियों को जुलाई 2009 से मंहगाई भत्ते की 5 प्रतिशत किस्त जारी करने की घोषणा की। इसका अक्तूबर 2009 से नकद भुगतान किया जाएगा। उन्होंने प्रदेश के पेंशनधारकों को मंहगाई भत्ते की 11 प्रतिशत किस्त जारी करने की घोषणा की, जिसमें से 6 प्रतिशत प्रथम जनवरी, 2009 से तथा 5 प्रतिशत प्रथम जुलाई 2009 से दिया जाएगा। इसका भुगतान भी अक्तूबर 2009 से किया जाएगा।

मुख्य मंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार कर्मचारियों के कल्याण के प्रति वचनबद्ध है तथा उनकी सभी जायज मांगों एवं समस्याओं पर सहानुभूतिपूर्वक विचार किया गया है। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश ने बड़ी हुई दरों पर कर्मचारियों को मंहगाई भत्ते की किस्त जारी की है, जबकि पंजाब को अभी इसे जारी करना है।

भानुपल्ली-बिलासपुर-बैरी रेल लाइन निर्माण को स्वीकृति

उत्तर रेलवे द्वारा प्रदेश की भानुपली-बिलासपुर-बैरी ब्रॉडगेज़ रेल लाइन के 3 कि.मी. के पहले हिस्से के निर्माण को स्वीकृति प्रदान की गयी है, जिस पर 17.25 करोड़ रुपये व्यय किए जायेंगे। यह जानकारी मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने गत दिनों शिमला में उत्तर रेलवे से प्राप्त सूचना के उपरांत दी।

मुख्य मंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार द्वारा केन्द्र से इस महत्त्वाकांक्षी रेल परियोजना के लिए किए गए लगातार प्रयासों के परिणामस्वरूप ही निर्माण कार्य आरम्भ करने में सफलता प्राप्त हुई है। उन्होंने कहा कि इस रेल लाइन के निर्माण से बेहतर परिवहन सुविधा उपलब्ध होगी तथा पर्यावरण प्रदूषण भी कम होगा। रेल लाइन के निर्माण से औद्योगिक विकास के लिए अधोसंरचना को और सुदृढ़ करने में सहायता मिलेगी।

उन्होंने कहा कि भानुपली-बिलासपुर-बैरी ब्रॉडगेज़ रेल लाइन के आरंभ हो जाने से राज्य में बारहमासी

तीन किलोमीटर रेल मार्ग पर 17.25 करोड़ होंगे व्यय

रेल यातायात सुविधा उपलब्ध होगी, जिससे पर्यटन विकास को भी बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने कहा कि इस रेल लाइन का पूर्व संभाव्यता सर्वेक्षण प्रदेश सरकार द्वारा अपने संसाधनों के माध्यम से करवाया गया है तथा रेल लाइन के निर्माण लागत को केन्द्र तथा प्रदेश सरकारों द्वारा 75:25 के आधार पर वहन किया जाएगा।

प्रो. धूमल ने कहा कि प्रदेश सरकार ने भानुपली-बिलासपुर-बैरी ब्रॉडगेज़ रेल लाइन को मण्डी-मनाली से लेह तक बढ़ाने का मामला भारत सरकार तथा केन्द्रीय रेल मंत्रालय के साथ उच्च स्तर पर उठाया गया है।

उन्होंने कहा कि रेल मंत्रालय ने बिलासपुर से लेह वाया कुल्लू मनाली तक नई ब्रॉडगेज़ रेल लाइन के निर्माण के इंजीनियरिंग एवं ट्रैफिक सर्वे के लिए 81 लाख रुपये स्वीकृत किए हैं। 408 कि.मी. लंबी बिलासपुर-लेह रेल लाइन का सर्वेक्षण 2 वर्षों की अवधि में पूरा किया जाएगा।

केन्द्र से 244 करोड़ की 194 सड़क योजनाएं मंजूर

केन्द्र सरकार द्वारा प्रदेश के लिए 194 ग्रामीण सड़क प्रस्तावों को स्वीकृति प्रदान कर प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के अंतर्गत 250 से अधिक आबादी वाले सभी गांवों को सड़क मार्ग से जोड़ने का मार्ग प्रशस्त हो गया है। कुल 243.43 करोड़ रुपये लागत की इन परियोजनाओं के निर्माण से प्रदेश में ग्रामीण क्षेत्रों में सड़क नेटवर्क सुदृढ़ होगा। यह जानकारी लोक निर्माण मंत्री ठाकुर गुलाब सिंह ने गत दिनों शिमला में लोक निर्माण विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक में दी।

ठाकुर गुलाब सिंह ने कहा कि मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल के प्रयासों के परिणामस्वरूप केन्द्र सरकार ने प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत इन सड़क परियोजनाओं को स्वीकृति प्रदान की है। उन्होंने कहा कि इन परियोजनाओं से प्रदेश की 203 बस्तियों को सड़क सुविधा उपलब्ध होगी तथा 2604 कल्वर्टों सहित 609 कि.मी. लंबी सड़कों का निर्माण किया जाएगा

लोक निर्माण मंत्री ने कहा कि प्रदेश में 83 सड़कों के निर्माण को सुनिश्चित बनाने के लिए वन विभाग को एन.पी. वी. (नेट प्रेजैंट वैल्यु) के रूप में 15 करोड़ रुपये जारी किए गए हैं, ताकि प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना तथा नाबार्ड के अंतर्गत कार्यान्वित की जाने वाली इन सड़क परियोजनाओं पर शीघ्र कार्य आरंभ किया जा सके। उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार ने इस धनराशि को जमा नहीं करवाया था, इसलिए प्रदेश सरकार ने ही इसे जमा किया है, ताकि इन परियोजनाओं पर शीघ्रातिशीघ्र कार्य आरंभ किया जा सके। उन्होंने कहा कि अभी भी 196 सड़क परियोजनाओं पर कार्य आरंभ नहीं किया जा सका है क्योंकि वन विभाग को एन.पी.वी. के रूप में 40 करोड़ रुपये जमा किए जाने शेष हैं। ठाकुर गुलाब सिंह ने कहा कि प्रदेश सरकार वर्ष 2012 तक राज्य के 250 तथा इससे अधिक आबादी वाले गावों को सड़क मार्ग से जोड़ने के प्रति वचनबद्ध है। उन्होंने कहा कि विभाग ने पायलट योजना के आधार पर प्लास्टिक कचरे को तारकोल में मिलाकर सड़क को पक्का करने का कार्य आरंभ किया है, जिसमें एक लाख से भी अधिक प्लास्टिक थैलों का प्रयोग किया जाएगा।

वर्ष 2012 तक राज्य के 250 तथा इससे अधिक आबादी वाले गावों को सड़क मार्ग से जोड़ना सरकार का लक्ष्य

करसोग क्षेत्र पर्यटन की दृष्टि से विकसित होगा

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने गत दिनों मण्डी जिला के करसोग में एक निजी होटल 'तेजस' का उद्घाटन किया। प्रो. धूमल ने कहा कि करसोग क्षेत्र पर्यटन की दृष्टि से विकसित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि क्षेत्र में पर्यटकों की सुविधा के लिए आधारभूत एवं अन्य सुविधाएं उपलब्ध करवायी जाएंगी। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार प्रदेश के कुछ चुनिंदा पर्यटन स्थलों के अतिरिक्त अन्य नये पर्यटक स्थलों के विकास को विशेष प्राथमिकता दे रही है। उन्होंने कहा कि करसोग एक ऐसा क्षेत्र है जहां धार्मिक तथा प्राकृतिक पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं।

इस अवसर पर स्वास्थ्य मंत्री डॉ. राजीव बिन्दल, करसोग के विधायक श्री हीरा लाल, मिल्क फेडरेशन के अध्यक्ष श्री मोहन लाल जोशी, खाद्य एवं आपूर्ति निगम के उपाध्यक्ष श्री राम स्वरूप शर्मा, उपायुक्त मंडी श्री ओंकार शर्मा तथा पुलिस अधीक्षक मंडी श्री सोनल अग्निहोत्री भी उपस्थित थे।

समारोहों में पुष्प एवं उपहार न देने का आग्रह

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने प्रदेश के लोगों से आग्रह किया है कि वे उनको सरकारी समारोह में पुष्प-गुच्छ तथा अन्य उपहार देने के बजाए उस पर होने वाले खर्चों को मुख्य मंत्री राहत कोष में दान करें ताकि इस धन का उपयोग ज़रूरतमंदों की सहायता के लिए किया जा सके।

मुख्य मंत्री ने गत दिनों मंडी जिला के ख्योड़ में जिला स्तरीय नलवाड़ मेले के अवसर पर यह विचार व्यक्त किए। मुख्य मंत्री ने कहा कि निर्धन, जरूरतमंद तथा कमजोर वर्गों का उत्थान एवं कल्याण वर्तमान प्रदेश सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। उन्होंने लोगों से आग्रह किया कि वे मुख्य मंत्री राहत कोष में अधिक से अधिक दान दें।

मुख्य मंत्री ने इस अवसर पर डॉ. इंद्र सिंह ठाकुर द्वारा भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी की कविताओं पर आधारित पुस्तक **'संवेदना और शिल्प'** तथा हिमाचल के पूर्व राज्यपाल श्री विष्णुकांत शास्त्री के साहित्यिक योगदान पर लिखी पुस्तक **'साहित्य में संवेदना और शिल्प का स्वरूप'** का विमोचन भी किया।

शिक्षण संस्थानों में लोकप्रिय साबित हुए

'रेड रिब्बन क्लब'

युवाओं को एड्स की भयानक बीमारी बारे जागरूक करने के लिए शिक्षण संस्थाओं में 'रेड रिब्बन क्लब' लोकप्रिय साबित हो रहे हैं तथा नोडल युवा क्लब एवं युवा विकास केन्द्र इस कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। प्रदेश के महाविद्यालयों में इस तरह के 166 क्लब तथा विभिन्न गैर सरकारी संगठनों द्वारा 75 युवा क्लब स्थापित किए गए हैं। इस बीमारी से कारगर तरीके से निपटने के लिए सरकार द्वारा चलाए जा रहे एड्स नियन्त्रण कार्यक्रम के उत्साहवर्द्धक परिणाम देखने को मिल रहे हैं, जिससे इस लाईलाज बीमारी से दृढ़ता के साथ लड़ने में आशा की एक नई किरण दिखाई दी है। प्रदेश में मार्च, 2009 तक एच. आई.वी. पॉजिटिव के 3530 मामले पाए गए हैं, जिनमें 608 पूर्ण विकसित एड्स के मामले शामिल हैं। एड्स के रोगियों में निरन्तर हो रही वृद्धि के दृष्टिगत राज्य एड्स नियन्त्रण सोसाईटी ने विभिन्न अभियान आरम्भ कर लोगों को इस रोग के प्रति जागरूक करने की दिशा में सकारात्मक पहल की है तथा एड्स से पीड़ित रोगियों को चिकित्सा सहायता उपलब्ध करवाई जा रही है। सोसाइटी द्वारा प्रदेश के हमीरपुर, शिमला, कांगड़ा तथा सोलन ज़िलों में 'ज़िन्दगी ज़िन्दाबाद' नामक विशेष अभियान चलाया गया, जिसके तहत लोक प्रस्तुतियां, क्विज़ तथा वीडियो शो का आयोजन किया गया। सोसाईटी ने प्रदेश के 350 स्थानों पर सचल प्रचार वाहनों के माध्यम से 90 हजार लोगों को एड्स के प्रति जागरूक किया।

स90 हजार लोगों को एड्स के प्रति जागरूक किया गया।

सचार जिले में 'जिन्दगी जिन्दाबाद' विशेष अभियान चलाया गया।

एड्स नियन्त्रण कार्यक्रम के तहत लोगों को एड्स के बारे में सूचना एवं परामर्श देने के लिए स्थापित राज्य व्यापी नि:शुल्क एच.आई.वी/ एड्स हैल्प लाईन न0 1219 उपयोगी साबित हो रही है। हैल्प लाईन केन्द्र ने गत चार महीनों की अवधि के दौरान 1825 व्यक्तियों द्वारा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर देकर उनका समाधान किया है। एक एंटी-रेट्रोवायरल थेरेपी केन्द्र इन्दिरा गांधी मेडिकल अस्पताल में कार्य कर रहा है, जहां पर 591 मरीज़ों का इलाज किया जा रहा है। दो और ए.आर.टी. केन्द्र हमीरपुर व मेडिकल कालेज टांडा में खोले जाएंगे। शीघ्र ही चार ए.आर.टी. सम्बन्धित केन्द्र मंडी, शिमला, बिलासपुर व ऊना में स्थापित किए जाएंगे। एड्स से ग्रसित 15 वर्ष की आयु से उपर के 683 बच्चों को उनकी शिक्षा एवं दैनिक दिनचर्या की जरूरतों हेतु 30,75,900 की वित्तीय सहायता उपलब्ध करवाई जा रही है। इसके अतिरिक्त मरीज़ों को ए.आर.टी. केन्द्र में चिकित्सा हेतु आने-जाने के खर्च पर 7,25,032 की राशि उपलब्ध करवाई गई है। राष्ट्रीय एड्स नियन्त्रण कार्यक्रम के तहत विभिन्न योजनाओं को सही ढंग से लागू करने के लिए विश्व बैंक द्वारा हिमाचल प्रदेश की सराहना की गई है। यद्यपि हिमाचल प्रदेश में एच.आई.वी के मामले कम आंके गए हैं लेकिन राज्य द्वारा इस भयानक बीमारी को रोकने के लिए राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण समिति (नाको) द्वारा सुझाए गए दिशा-निर्देशों का कड़ाई से पालन किया जा रहा है। विश्व बैंक पर्यवेक्षक दल का मानना है कि हिमाचल प्रदेश में एड्स रोगियों को स्थापित शिकायत निवारण प्रणाली काफी कारगर साबित हो रही है। *(सूजसवि)*

'किड्स फूड कॉर्नर' स्थापित होंगे

प्रधान सचिव पर्यटन श्रीमती मनीषा नंदा ने गत दिनों शिमला में पर्यटन विभाग तथा राज्य पर्यटन विकास निगम की समीक्षा हेतु आयोजित संयुक्त बैठक को संबोधित करते हुए अधिकारियों को निर्देश दिए कि केन्द्रीय पर्यटन मंत्रालय द्वारा वित्तपोषित डेस्टिनेशन एण्ड सर्किट योजना के तहत विभिन्न परियोजनाओं का कार्य शीघ्र पूरा किया जाए। उन्होंने निगम के होटलों में 'आक्यूपैंसी' दर में सुधार लाने पर भी बल दिया। उन्होंने निगम के अधिकारियों को निर्देश दिए कि प्रदेश सरकार के निर्णय के अनुसार जनजातीय क्षेत्रों के लिए नई बसें खरीदी जाएं। श्रीमती नंदा ने बताया कि बैठक में निर्णय लिया गया है कि प्रदेश में किड्स फूड कॉर्नर स्थापित किए जाएं। उन्होंने हिमाचली फूड एण्ड क्रॉफ्ट सेंटर स्थापित करने के लिए स्थल का चयन करने का भी सुझाव दिया। निदेशक पर्यटन डॉ. अरुण कुमार ने कहा कि शिमला में आधुनिक बहुस्तरीय कार पार्किंग आरम्भ करने का निर्णय लिया गया है तथा इस संबंध में हिमाचल प्रदेश सचिवालय में एक महीने के भीतर डेमन्सट्रेशन किया जाएगा। राज्य पर्यटन विकास निगम के प्रबन्ध निदेशक श्री सुभाशीष पाण्डा ने बताया कि निगम द्वारा होटलों में विद्यार्थी पैकेज, करवाचौथ, नववर्ष व क्रिसमस तथा विश्व अपंगता दिवस जैसे अवसरों पर विशेष पैकेज आरंभ करने की दिशा में कार्य किया जा रहा है।

वरदान बनी मध्य हिमालयन वाटरशैड परियोजना

कांगड़ा जिला के चरूरी गांव के श्री पवन कुमार का छ: सदस्यों का परिवार जो मात्र दो हेक्टयर भूमि से जो कुछ समय पूर्व तक बहुत कठिनाई से अपने परिवार का भरण पोषण कर सकता था। दो कमरों वाले अपने कच्चे मकान में रह रहा यह परिवार अपनी किस्मत को कोस रहा था। उसकी गरीबी व मफलूसी का पहला शिकार बनी उसकी दो पुत्रियां, जिन्हें आठवीं के बाद अपनी पढ़ाई छोड़नी पड़ी।

श्री पवन कुमार के जीवन में बदलाव विश्व बैंक की मध्य हिमालय वाटरशैड विकास परियोजना तथा हिमाचल प्रदेश सरकार के सकारात्मक प्रयासों से आया है। आज पवन कुमार कम जोत पर भी अच्छी फसल पैदा कर रहा है। गत छ: महीनों में ही उसने अकेले सब्जियां उगाकर 80 हजार रुपये की आमदनी अर्जित की है। उसकी बेटियां दोबारा स्कूल जाने लगी हैं और उसके दो कमरों वाले कच्चे मकान की जगह आज उसका छ: कमरों का पक्का मकान है। परिवार अतिरिक्त आमदनी का अच्छा उपयोग कर रहा है। प्रदेश के विभिन्न गांवों में जहां 90 प्रतिशत से अधिक लोग बसते हैं, ऐसे कई पवन कुमार हैं जिनके पास केवल आधा एकड़ औसत भूमि है। आज जब पूरा विश्व वैश्विक आर्थिक मंदी से जूझ रहा है हिमाचल प्रदेश के हज़ारो परिवार आश्वस्त है, जबकि दो साल पहले तक ऐसा नहीं था। चरूरी गांव प्रदेश भर में परिवर्तन के इस दौर का साक्षी है एक सर्वेक्षण के अनुसार विश्व बैंक की मध्य हिमालयन वाटरशैड विकास परियोजना के अन्तर्गत लाभार्थियों का चयन करने के लिए निर्धनता एवं पहुंच दो कारक हैं। इस परियोजना का सबसे बड़ा योगदान यह है कि इसमें भूमि तथा जल का उचित प्रबन्धन सुनिश्चित बनाया गया है।

इस विश्व बैंक परियोजना का सबसे सशक्त एवं कारगर घटक यह है कि परियोजना के अन्तर्गत वाटरशैड ढ़ांचों का निर्माण किया गया, जिससे अब तक व्यर्थ बह रहे पानी को संग्रहित किया गया। अब पानी दूर दराज क्षेत्रों तक आसानी से पहुंचाया जाता है, जिससे किसानों की खेती करने की सोच एवं सामर्थ्य में बदलाव आया है। सुदृढ़ एवं मजबूत जल संग्रहण ढ़ांचों का प्रबन्धन ग्रामीणों द्वारा किया जा रहा है।

आज जब पानी किसानों के खेतों तक पहुंच रहा है अब वे केवल पारम्परिक खेती पर ही निर्भर नहीं है। आज वे अपने खेतों में भारी मात्रा में कई किस्म की सब्जियां उगाकर और इनसे लाभ अर्जित कर रहे हैं, इसके परिणामस्वरूप सैंकड़ों निर्धन परिवारों की आय में कई गुणा वृद्धि हुई है। आज वे अपनी घरेलू आवश्यकताओं पर, शिक्षा पर तथा पशुधन पर पहले से ज्यादा व्यय कर रहे हैं। ग्रामीण को सिंचाई एवं पेयजल के लिए समुचित मात्रा में पानी उपलब्ध हो रहा है। आज रवि तथा खरीफ फसलों के लिए पर्याप्त पानी है तथा शत प्राातिशत क्षेत्रों में बीजाई की गई है, जबकि दो वर्ष पहले तक उत्पादकता स्तर 0 से 15 प्रतिशत था।

विश्व बैंक की इस परियोजना का एक दूसरा महत्वपूर्ण पहलू है इससे महिलाएं भी एक कारगर क्रांति लाने में सफल हुई है। स्वयं सहायता योजना ग्रामीणों के लिए एक नया मूल मंत्र बन कर उभरी है। परियोजना निदेशक श्री आर. के. कपूर बताते हैं कि 'इस परियोजना में महिला समूह एक मुख्य शक्ति रही है। आज 5 हजार से अधिक समूह परियोजना की विभिन्न गतिविधियों में सक्रियता से जुड़े हैं'। स्वयं सहायता समूह विभिन्न आय सृजन गतिविधियों में संलिप्त है।

चरूरी गांव के प्रधान श्री शामलाल जरैल, के अनुसार सम्पदा का स्वामित्व, क्षेत्र तथा स्वयं के विश्वास में ग्रामीणों की सक्रिय सहभागिता इस परियोजना की सफलता तथा जीवनयापन के व्यापक अवसर सृजित करने में मुख्य कारक है। परियोजना क्षेत्र के तहत प्रदेश का कुल 20 प्रतिशत क्षेत्र आता है। अकेले चरूरी गांव के श्री भवानी ठाकुर ने एक हजार रुपये की हल्दी, 6 हजार रुपये के प्याज तथा दो हजार पांच सौ रुपये की लहसुन का उत्पादन कर इसे लाभप्रद मूल्य में बेचा है। श्रीमती बानी देवी का कहना है 'मैं विभिन्न आय सृजन की गतिविधियों के माध्यम से अपने पति के बराबर ही कमा रहे हूं'। चरूरी गांव की श्रीमती सुषमा देवी का कहना है कि 'मैं पौधरोपण, कुक्कड़ पालन तथा बुनाई जैसी विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से वर्ष में 6 से 7 हजार रुपये कमा रही हूं।'

हिमाचल को सात मानकों में पुरस्कार

प्रदेश के बढ़ते कदम के द्योतक

राज्यों की दशा-दिशा के बारे में हाल ही में नई दिल्ली में इंडिया टुडे द्वारा आयोजित 'स्टेट ऑफ स्टेटस' समारोह में हिमाचल को प्राप्त सात पुरस्कारों ने यह सिद्ध कर दिया है कि हिमाचल प्रदेश देश के अग्रणी राज्यों की कड़ी में शामिल हो गया है। यह प्रदेशवासियों के लिए प्रसन्नता की बात है। मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने राज्य के कीर्तिमानों का श्रेय समस्त हिमाचलवासियों को देते हुए कहा कि प्रदेशवासियों के सतत् सहयोग से प्रदेश नित नये कीर्तिमान स्थापित कर रहा है।

देश की प्रसिद्ध पत्रिका द्वारा करवाये गये सर्वेक्षण से स्पष्ट है कि हिमाचल प्रदेश विकास और उन्नति के मार्ग पर तेजी से आगे बढ़ रहा है। राज्य के लिए 'बेस्ट बिग स्टेट' में शिक्षा, स्वास्थ्य, पूंजी निवेश तथा मैक्रो इकोनॉमी में प्रथम स्थान, फॉरेस्ट मूवर श्रेणी में तीन पुरस्कार-ओवरऑल परफॉरमेंस, पूंजी निवेश तथा मैक्रो इकोनॉमी में शीर्ष स्थान हासिल करना एक बहुत बड़ी बात है जिस पर प्रदेशवासियों को गर्व होना चाहिए।

शिक्षा-राज्य ने केरल को नीचे धकेल कर सबसे शिक्षित राज्य होने का गौरव हासिल किया है। प्रदेश ने यह स्थान सरकार द्वारा शिक्षा के प्रति सकारात्मक रुख अपनाने की बदौलत प्राप्त किया है। आज राज्य शिक्षा का हब बनने की ओर अग्रसर है। यहां अनेक उच्च शिक्षण संस्थान खुल रहे हैं। वर्तमान सरकार ने शिक्षा क्षेत्र पर ज्यादा ध्यान केन्द्रित किया है। ऊंची साक्षरता दर (2001 की जनगणना के अनुसार 76.5 प्रतिशत, जो राष्ट्रीय औसत से अधिक है) तो है ही, राज्य ने प्राथमिक और उससे ऊपर की कक्षाओं में स्कूल छोड़ने वालों की दर 0.01 पर लाने में भी सफलता हासिल की है।

स्वास्थ्य-लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने का पैमाना शिशु मृत्यु दर, प्रशिक्षित स्वास्थ्य कर्मियों की मदद से प्रसव की संख्या तथा प्रति व्यक्ति पंजीकृत चिकित्सकों की संख्या से आंका जाता है। इसके साथ ही स्त्री पुरुष अनुपात, महिलाओं और कन्या शिशु के प्रति पक्षपाती दृष्टिकोण से भी आंका जाता है। इस क्षेत्र में राज्य ने देश के बड़े राज्यों में पहला स्थान हासिल कर सरकार के लोगों को घर-द्वार पर विशेषज्ञ स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के प्रयासों पर मोहर लगाई है।

निवेश वातावरण-वर्तमान आर्थिक परिदृश्य में आर्थिक विकास की दर को बढ़ाने के प्रति सरकार गंभीर है। राज्य में करोड़ों रुपये की लागत से अनेक उद्योग, बिजली परियोजनाएं स्थापित हो रही हैं। निवेश के वातावरण का आकलन बेहतर निवेश माहौल, बेहतर श्रम माहौल, प्रति व्यक्ति पूंजी निवेश इत्यादि पर निर्भर करता है। राज्य ने पूंजी निवेश क्षेत्र में देशभर में प्रथम स्थान प्राप्त कर यह साबित कर दिया है कि सरकार आर्थिक मंदी के इस दौर में भी औद्योगिक निवेश को व्यापक बढ़ावा दे रही है।

सर्वेक्षण से स्पष्ट हुआ है कि औद्योगिकीकरण और विकास के रास्ते पर अपने पड़ौसी राज्यों की तुलना में काफी देर से चलना शुरू करने के बावजूद राज्य ने अच्छा प्रदर्शन किया है और अपने भविष्य के लिए ऊंचे मानक तय कर लिये हैं। मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल के शब्दों में, 'यह एक दुर्गम प्रदेश है, हमने इंच दर इंच चट्टान दर चट्टान विकास किया है।'

मैको इकोनमी-टिकाऊ और समावेशी प्रगति दर्शाती है कि राज्य टिकाऊ, व्यापक और बुनियादी सम्पन्नता के लिए अपने वित्तीय संसाधनों का किस तरह प्रबन्धन करता है। हिमाचल ने अर्थव्यवस्था के सुदृढ़ीकरण के लिए व्यापक कदम उठाकर राज्य का नाम ऊंचा किया है।

हिमाचल देश का पहला पर्वतीय प्रदेश है जिसने बुनियादी सुविधाओं के महत्व को भली-भांति समझा है यही कारण है कि आज राज्य को देश में विकास के सबसे प्रभावशाली मॉडल के रूप में देखा जा रहा है।

सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने कहा, 'इसमें कोई संदेह नहीं कि निजी क्षेत्र की साझेदारी के साथ केन्द्र, राज्य का समन्वित विकास खासतौर से अधोसंरचना के निर्माण में अहम होगा। यदि व्यावसायिक क्षेत्र सामाजिक जिम्मेदारी के साथ सहयोग कर सके तो यह बड़ा बदलाव होगा। ...ऐसे प्रयासों के लिए ऊपर से नहीं बल्कि जमीनी स्तर पर सहमति बनानी चाहिए। संघीय व्यवस्था में केन्द्र राज्य सम्बन्धों के मद्देनजर विमर्श की शुरूआत जमीनी स्तर पर होनी चाहिए। केन्द्र सरकार ने मदद की बात कही है। पैसा छठी इन्द्री है इसके बिना बाकी पांच इंद्रियां काम नहीं कर सकती।'

राज्य को प्राप्त सात पुरस्कार प्रेरणा के स्रोत हैं तथा ये राज्य को अन्य राज्यों से और अधिक आगे बढ़ने का मौका देंगे। राज्य द्वारा अर्जित इस उपलब्धि ने प्रदेश का मस्तक ऊंचा किया है और हिमाचल देश भर में विकास का मुकुट बना है।

–विनोद भारद्वाज

शहीद स्मारक का लोकार्पण

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल हमीरपुर में शहीद कैप्टन म दुल शर्मा की स्म ति में स्थापित स्मारक का लोकार्पण करते हुए

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने सैनिकों एवं भूतपूर्व सैनिकों के कल्याण के प्रति अपनी वचनबद्धता को दोहराते हुए कहा है कि उनकी सरकार ने कारगिल युद्ध में शहीद हुए प्रदेश के 52 रणबांकुरों के एक-एक परिजन को सरकारी नौकरी प्रदान की थी। देश के प्रथम परमवीर चक्र विजेता मेजर सोमनाथ शर्मा की स्मृति में उनकी सरकार ने ही नवम्बर, 2000 में पालमपुर में उनकी प्रतिमा तथा स्मृति वाटिका स्थापित की थी।

सरकार ने दिया शहीदों को पूर्ण सम्मान

मुख्य मंत्री गत दिनों हमीरपुर में शहीद कैप्टन मुदुल शर्मा की स्मृति में स्थापित शहीद स्मारक का लोकार्पण करने के उपरान्त उपस्थित जन समुदाय को सम्बोधित कर रहे थे। मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने शहीद कैप्टन मृदुल शर्मा की सेवाओं को याद करते हुए कहा कि शहीद कैप्टन शर्मा ने देश की सेवा के लिए जो बलिदान दिया है, उसे न तो कभी भुलाया जा सकता है और न ही उसका कोई मूल्य चुकाया जा सकता है। सेवानिवृत ले. कर्नल जे.के. शर्मा ने इस अवसर पर शहीद कैप्टन मृदुल शर्मा के मातृभूमि के प्रति योगदान के बारे जानकारी दी।

ग्वालथाई औद्योगिक क्षेत्र के लिए वैकल्पिक मार्ग की सुविधा शीघ्र

प्रदेश सरकार बिलासपुर जिले के ग्वालथाई औद्योगिक क्षेत्र को वैकल्पिक मार्ग से जोड़ने के मामले को पंजाब सरकार के साथ उठाएगी। यह जानकारी गत दिनों मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने बिलासपुर जिले के ग्वालथाई औद्योगिक क्षेत्र में 'हर्बल इंडिया फाइटोकैम' इकाई के उद्घाटन के पश्चात एक विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए दी।

मुख्य मंत्री ने कहा कि ग्वालथाई औद्योगिक क्षेत्र के लिए बेहतर सम्पर्क मार्ग सुविधा उपलब्ध करवाना प्रदेश सरकार की प्राथमिकता है ताकि उद्योगों के लिए कच्चा माल लाने एवं तैयार उत्पाद को सुविधापूर्वक ले जाना सुनिश्चित बनाया जा सके। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार वैकल्पिक मार्ग के निर्माण के प्रस्ताव को पड़ोसी राज्य पंजाब से उठा रही है, जिसके लिए प्रदेश सरकार ने हिमाचल के हिस्से के कार्य को पूरा करने के लिए 3 करोड़ रुपये का प्रावधान किया है। उन्होंने कहा कि पंजाब सरकार से उनके अधिकार क्षेत्र में पड़ने वाले मार्ग के सुधार का आग्रह किया गया है, ताकि ग्वालथाई औद्योगिक क्षेत्र को मुख्यधारा से जोड़ा जा सके। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय उच्च मार्ग के स्वारघाट-जामली हिस्से में 6.83 करोड़ रुपये की लागत से सुधार एवं चौड़ा करने का कार्य किया जा रहा है, ताकि यह कार्य निश्चित समयावधि में पूरा किया जा सके। मुख्य मंत्री ने कहा कि राज्य ने लगभग सभी प्रमुख क्षेत्रों में 7 राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कार प्राप्त करने में सफलता हासिल की है, जिससे प्रदेश तथा प्रदेशवासियों का सम्मान बढ़ा है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार ने इन पुरस्कारों को प्रदेश के लोगों को समर्पित किया है क्योंकि उनकी शुभकामनाओं एवं कड़ी मेहनत के बिना

स्वारघाट-जामली राष्ट्रीय उच्च मार्ग का 6.83 करोड़ की लागत से होगा सुधार

यह संभव नहीं था। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार भविष्य में भी इन पुरस्कारों को हासिल करने की क्षमता को बनाए रखने के लिए और बेहतर प्रयास करेगी।

प्रो. धूमल ने कहा कि श्रीनयना देवी में नये स्तरोन्नत सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र भवन के निर्माण पर 1.22 करोड़ रुपये व्यय किये जायेंगे, जबकि ग्वालथाई में सामुदायिक केन्द्र के निर्माण पर 1.15 करोड़ रुपये व्यय किए जायेंगे। उन्होंने कहा कि उद्यमियों को बैंक सेवा की सुविधा उपलब्ध करवाने के लिए औद्योगिक क्षेत्र में स्टेट बैंक ऑफ पटियाला अपनी शाखा भी आरंभ करेगा। उन्होंने कहा कि अगले वर्ष से ग्वालथाई में एक आयुर्वेदिक डिस्पेंसरी भी आरंभ की जाएगी। 'हर्बल इंडिया फाइटोकैम' के प्रबंध निदेशक श्री सुरेन्द्र कुमार वशिष्ट ने इस अवसर पर दो लाख रुपये का ड्राफ्ट मुख्य मंत्री राहतकोष के लिए मुख्य मंत्री को भेंट किया।

इससे पूर्व मुख्य मंत्री ने पहले शारदीय नवरात्र के अवसर पर श्री नयना देवी मंदिर में पूजा-अर्चना की। स्थानीय विधायक श्री रणधीर शर्मा ने मुख्यमंत्री का स्वागत किया तथा क्षेत्र के दौरे के लिए उनका आभार व्यक्त किया। उन्होंने गत 20 माह की अवधि के दौरान क्षेत्र में हुए विकास कार्यों का विस्तृत ब्योरा दिया तथा मुख्य मंत्री को स्थानीय लोगों की विभिन्न मांगों से अवगत करवाया।

स्वास्थ्य मंत्री डॉ. राजीव बिंदल, हिमाचल प्रदेश विधानसभा के उपाध्यक्ष श्री रिखी राम कौंडल, मुख्य संसदीय सचिव श्री सतपाल सिंह सत्ती तथा प्रदेश सरकार के वरिष्ठ अधिकारी भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

नरेगा के तहत 55 हजार परिवार पंजीकृत

ज़िला सिरमौर में विभिन्न विभागों द्वारा चलाई जा रही विकासात्मक योजनाओं की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए प्रधान सचिव (लोक निर्माण विभाग) डॉ. पीसी कपूर ने बताया कि नरेगा योजना के अंतर्गत् ज़िला सिरमौर में इस वित्त वर्ष में अभी तक नौ करोड़ रुपये व्यय किए जा चुके हैं।

उन्होंने बताया कि ज़िला में कुल 61,651 ग्रामीण परिवार हैं इनमें से इस योजना के तहत् अब तक कुल 55,075 परिवार पंजीकृत किए जा चुके हैं। उन्होंने बताया कि ज़िला को अब तक भारत सरकार द्वारा लगभग 51 करोड़ रुपये प्राप्त हुए हैं जिनमें से अब तक लगभग 49 करोड़ रूपये विभिन्न योजनाओं पर खर्च किए जा चुके हैं।

नयनादेवी-आनंदपुर साहिब के मध्य बनेगा रज्जू मार्ग

पंजाब सरकार की प्रधान सचिव, पर्यटन श्रीमती गीतिका काहलों की अध्यक्षता में गत दिनों चंडीगढ़ में हिमाचल प्रदेश तथा पंजाब सरकारों के उच्चाधिकारियों की एक बैठक आयोजित की गई, जिसमें विश्व प्रसिद्ध धार्मिक पर्यटक स्थलों आनंदपुर साहब तथा श्री नयना देवी के मध्य रज्जू मार्ग स्थापित करने के समझौता ज्ञापन के नियमों व शर्तों को अंतिम रूप दिया गया। बैठक में निर्णय लिया गया कि इस रज्जू मार्ग परियोजना के लिए दोनों राज्यों द्वारा 'स्पेशल पर्पज व्हीकल' तैयार किया जाएगा, जिसमें दोनों राज्यों के सदस्यों को शामिल किया जाएगा। हि.प्र. की प्रधान सचिव पर्यटन श्रीमती मनीषा नंदा, निदेशक पर्यटन एवं नागरिक उड्डयन डॉ. अरुण कुमार शर्मा तथा 'राईट्स' परामर्शदाताओं ने भी बैठक में भाग लिया।

डॉ. अरुण कुमार शर्मा ने बताया कि बैठक में रज्जू मार्ग परियोजना के बारे में 'राईट्स' की अंतरिम रिपोर्ट को स्वीकृति प्रदान की गई है। उन्होंने कहा कि 3.6 किलोमीटर लंबे इस रज्जू मार्ग का निर्माण बी.ओ.टी के आधार पर किया जाएगा।

धर्मपुर-दिल्ली डीलक्स बस सेवा शीघ्र

परिवहन, शहरी विकास एवं नगर नियोजन मंत्री श्री महेन्द्र सिंह ठाकुर ने धर्मपुर में अधिकारियों की बैठक की अध्यक्षता करते हुए निर्देश दिए कि वे जन शिकायतों का शीघ्र निपटाएं। उन्होंने कहा कि शीघ्र ही धर्मपुर-दिल्ली के मध्य डीलक्स बस सेवा आरंभ की जाएगी।

वनों को आग से बचाने के लिए प्रभावी कदम

प्रदेश सरकार राज्य के हरित आवरण को संरक्षण प्रदान करने तथा प्रदेश के वनों को आग से बचाने के लिए वन अग्नि प्रबंधन के क्षेत्र में मध्य प्रदेश की तर्ज पर कार्य करेगी। यह जानकारी वन मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा ने गत दिनों शिमला में वन विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक को संबोधित करते हुए दी। उन्होंने कहा कि अक्तूबर माह में वन विभाग के उच्च अधिकारियों की बैठक आयोजित कर आगामी गर्मियों के मौसम में वनों को आग की घटनाओं से रोकने के लिए रणनीति को अंतिम रूप दिया जाएगा। अतिरिक्त मुख्य सचिव श्री अवय शुक्ला ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

लघु ऊर्जा उत्पादकों के लिए जलविद्युत निधि का गठन करना विचाराधीन

प्रदेश सरकार राज्य के छोटे मिनी एवं माइक्रो जल विद्युत उत्पादकों के कल्याण के लिए जल विद्युत निधि के गठन की संभावनाओं का पता लगाएगी, ताकि मिनी एवं माइक्रो जलविद्युत परियोजनाओं के त्वरित निष्पादन को सुनिश्चित बनाया जा सके। यह जानकारी मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने गत दिनों शिमला में हिम ऊर्जा तथा हिमालयन पावर प्रोड्यूसर एसोसियेशन द्वारा संयुक्त रूप से लघु जल विद्युत विकास पर आयोजित प्रथम विचार-विमर्श सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए दी।

मुख्य मंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार स्वतंत्र ऊर्जा उत्पादकों को पूर्ण सहयोग देगी ताकि आबंटित जल विद्युत परियोजनाओं का कार्य निर्धारित समय अवधि के भीतर पूरा किया जा सके। उन्होंने कहा कि ऐसी परियोजनाओं के लिए आवश्यक जल विद्युत उपकरण प्रदेश के भीतर उपलब्ध करवाने के भी प्रयास किए जाएंगे।

प्रो. धूमल ने कहा कि मिनी एवं माइक्रो जल विद्युत परियोजनाओं को पर्यावरण की दृष्टि से सुरक्षित तथा ऊर्जा आवश्यकताओं के लिए भी पर्याप्त माना जाता है। उन्होंने कहा कि यह प्रदेश के लिए एक सुखद अनुभूति है कि सैंकड़ों मिनी एवं माइक्रो जल विद्युत परियोजनाओं को निष्पादन के लिए स्थानीय उद्यमियों एवं प्रदेश के शिक्षित युवाओं को आबंटित किया गया है। म

ुख्य मंत्री ने कहा कि आबंटन एवं समझौता ज्ञापन के बीच समयावधि को कम करने के लिए यह निर्णय लिया गया है कि 'कन्स्युलेट लैटर' (consulate letter) जारी किया जाए और समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित करने की प्रक्रिया को समाप्त किया गया है।

उन्होंने कहा कि विभिन्न अनिवार्य स्वीकृतियों जैसे प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड से स्वीकृति, धारा 118 के तहत राजस्व विभाग से स्वीकृति तथा अन्य औपचारिकताएं सम्बन्धित विभागों द्वारा व्यवहारिकता स्वीकृति के बाद ही बिना टैक्नो इकानॉमिक स्वीकृति के बिना ही प्रदान की जाएगी।

उन्होंने कहा कि राज्य स्तरीय एकल खिड़की स्वीकृति एवं अनुश्रवण समिति का गठन किया गया है, ताकि जलविद्युत परियोजनाओं के निर्माण में विभिन्न अनापत्ति प्रमाणपत्रों को शीघ्र प्राप्त किया जा सके। उन्होंने कहा कि जिलास्तरीय एकल खिड़की स्वीकृति प्रणाली का भी उपायुक्त की अध्यक्षता में गठन किया गया है। उन्होंने कहा कि राज्य विद्युत परिषद तीन माह के भीतर टैक्नो इकानॉमिक स्वीकृति प्रदान करेगा।

मुख्य सचिव श्रीमती आशा स्वरूप ने कहा कि स्वतन्त्र ऊर्जा उत्पादकों द्वारा कार्यान्वयन के लिए स्थानीय क्षेत्र विकास प्राधिकरण के लिए विस्तृत दिशा-निर्देश तैयार किए गए हैं। उन्होंने कहा कि नयी ऊर्जा नीति को स्वतन्त्र ऊर्जा उत्पादकों को पेश आ रही मुश्किलों को ध्यान में रखकर बनाया गया है, जबकि 'मास्टर प्लान' हिमाचल प्रदेश ऊर्जा वितरण निगम द्वारा ऊर्जा मूल्यांकन को लेकर तैयार किया गया है। उन्होंने उद्यमियों द्वारा बैठक में पूछे गये प्रश्नों के उत्तर भी दिए।

हिम ऊर्जा विद्युत उत्पादक संघ के अध्यक्ष श्री अरुण शर्मा ने लघु जल विद्युत परियोजनाओं के निष्पादन में पेश आ रही समस्याओं की भी जानकारी दी।

उपाध्यक्ष श्री एस.एल. कपूर ने मुख्य मंत्री का स्वागत किया।

मुख्य संसदीय सचिव श्री सतपाल सत्ती, राज्य विद्युत परिषद के अध्यक्ष श्री सुभाष नेगी तथा विभाग के वरिष्ठ अधिकारी भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

145 जलविद्युत परियोजनाओं एवं 80 संचारण लाइनों को मंजूरी प्रदान

प्रदेश सरकार राज्य के समस्त नदी तटीय क्षेत्रों में उत्पादित ऊर्जा के कारगर संचारण को सुनिश्चित बनाने के लिए संयुक्त संचारण लाईनों की संभावनाओं का पता लगाएगी तथा स्थानीय ग्राम पंचायतों के सहयोग से प्रभावित लोगों को बेहतर राहत एवं पुनर्वास सुविधाएं उपलब्ध करवाये जाने की आवश्यकता है। यह जानकारी गत दिनों मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने भारत सरकार के संयुक्त उपक्रम सतलुज जलविद्युत निगम लिमिटेड तथा हिमाचल प्रदेश सरकार द्वार आयोजित सतलुज जल संग्रहण क्षेत्र के जलविद्युत निष्पादकों के सम्मेलन के उद्घाटन अवसर पर दी।

मुख्य मंत्री ने कहा कि ऊर्जा क्षेत्र के समक्ष विभिन्न जलविद्युत परियोजना क्षेत्रों से ट्रांसमिशन लाईन ले जाना एक बहुत बड़ी चुनौती है, जिससे उड्डयन संबंधी अनेक समस्याएं सामने आ रही हैं। उन्होंने कहा कि संचारण लाइनों को स्वतन्त्र ऊर्जा उत्पादकों एवं घाटी के लोगों के व्यापक हित में एकत्रित किए जाने की आवश्यकता है। प्रदेश सरकार ने इस उद्देश्य के लिए पहले ही हिमाचल प्रदेश ऊर्जा संचारण कम्प्यूटर सृजित कर प्रभावी पग उठाया है।

अतिरिक्त मुख्य सचिव वन श्री अवय शुक्ला ने परियोजना कार्यान्वयन प्राधिकरण द्वारा कैट योजना कार्यान्वयन पर अपना व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि 145 जलविद्युत परियोजनाओं तथा 80 संचारण लाइनों को मंजूरी प्रदान की गई है, जबकि मात्र 12 जलविद्युत परियोजनाओं तथा पांच संचारण लाइनों की स्वीकृति लेनी शेष हैं।

हिमाचल प्रदेश पॉवर कारपोरेशन लिमिटेड के प्रबन्ध निदेशक श्री तरुण कपूर ने प्रदेश में जलविद्युत परियोजनाओं का निष्पादन कर रहे ऊर्जा उत्पादकों को पेश आ रही विभिन्न समस्याओं की जानकारी दी।

सतलुज जलविद्युत निगम लिमिटेड के सी.एम.डी. श्री एच.के. शर्मा ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

मुख्य सचिव श्रीमती आशा स्वरूप तथा प्रदेश सरकार के अन्य वरिष्ठ अधिकारी इस अवसर पर उपस्थित थे।

गिरिराज
हिमाचल की प्रगति और संस्कृति का दर्पण

असंतुष्ट मनुष्य ज्यादा दिनों तक जीवित नहीं रहते।

-शेक्सपीयर

दूध-गंगा परियोजना

हिमाचल प्रदेश सरकार ने 25 सितम्बर को पंडित दीनदयाल उपाध्याय के जन्म दिवस पर 300 करोड़ रुपये की दूध- गंगा पशुपालन परियोजना प्रारम्भ कर प्रदेश के किसानों के उत्थान व उनके कल्याण के लिए एक अहम कदम उठाया है। इस परियोजना से प्रदेश भर के करीब 50 हजार से अधिक स्वयं सहायता समूह के माध्यम से प्रदेश के किसान लाभान्वित होंगे तथा ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को स्वरोजगार के नये अवसर उपलब्ध होंगे। इस परियोजना का शुभारम्भ प्रदेश के मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने किया। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने अपना पूरा जीवन समाज के कमजोर एवं उपेक्षित वर्गों तथा कृषक समुदाय के उत्थान के लिए समर्पित किया। पंडित दीनदयाल सच्चे राष्ट्र भक्त थे। पंडित दीनदयाल उपाध्याय को 25 सितम्बर को उनकी स्मृति में दूध-गंगा पशुपालन परियोजना का प्रारम्भ किया जाना सही मायनों में उपाध्याय जी को राज्य सरकार द्वारा दी जाने वाली बड़ी श्रद्धांजलि है। राज्य सरकार ने 353 करोड़ रुपये की पंडित दीन दयाल किसान बागबान समृद्धि योजना पहले ही आरम्भ कर रखी है जिसके अंतर्गत पॉली हाऊस, स्प्रिंक्लर तथा ड्रिप सिंचाई के लिए किसानों को 80 प्रतिशत का उपदान दिया जा रहा है। इस योजना के अंतर्गत लाभ लेने के लिए किसानों में बड़ा उत्साह देखा गया है। इसमें दो राय नहीं कि राज्य की वर्तमान सरकार ने किसानों, बागबानों के कल्याण तथा ग्रामीण क्षेत्रों के विकास पर विशेष ध्यान दिया है। सरकार ने कृषि व्यवस्था में बड़े पैमाने पर विविधता लाने के प्रयास किए हैं। इससे उत्पादन में भी बढ़ोतरी हुई है। सब्जी उत्पादन व गैर मौसमी सब्जी तथा फल उत्पादन को बढ़ावा दिया गया है। किसानों को उन्नत फल पौध उपलब्ध करवाने के लिए फल पौध नर्सरियों की स्थापना निजी क्षेत्र में की जा रही है। कृषकों के हित सरकार के लिए सदैव सर्वोपरि रहे हैं तथा उनकी अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए प्रभावशाली कदम उठाये गये हैं। किसान परम्परागत फसल पद्धति की बजाय अब फसल चक्र में विविधता ला रहे हैं। वे अब नई टैक्नोलॉजी अपनाने में परहेज नहीं करते, बीमा योजना का लाभ भी उन्हें हासिल होने लगा है। किसानों को उनके उत्पाद का उचित मूल्य सुनिश्चित करने के लिए सरकार ने जगह-जगह विपणन व्यवस्था को सुदृढ़ कर मण्डियां स्थापित की हैं। प्रत्येक फसल के लिए खाद की किस्म, मात्रा, कीटनाशकों व उनके उपयोग की जानकारी किसानों को उपलब्ध करवाई जा रही है। किसान भी रूचि से नई तकनीक अपना रहे हैं। कृषि उत्पादन को बढ़ाने में जल प्रबन्धन के साथ-साथ फसल प्रणाली, उर्वरकों, जैव खादों व कीटनाशकों आदि का उपयोग वैसे भी महत्वपूर्ण होता है। हिमाचल प्रदेश का एक बहुत बड़ा हिस्सा ग्रामीण क्षेत्र में आता है। इस समय यहां 90 फीसदी लोग कृषि पर निर्भर करते हैं और यही उनका मुख्य व्यवसाय भी है। राज्य की अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्र की महत्वपूर्ण भूमिका है। सब्जी उत्पादन में भी हिमाचल ने नया नाम कमाया है। युवा वर्ग अब सरकारी नौकरियों के पीछे न भाग कर कृषि को व्यवसाय बनाकर आय अर्जित करने लगा है। कृषि विज्ञान केन्द्रों के जरिये आज किसानों को बाजार की स्थिति व फसलों की दरों की जानकारी उपलब्ध हो रही है। इस बात को कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि आज हिमाचल प्रदेश अन्य क्षेत्रों के साथ-साथ कृषि अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने में सार्थक कदम उठा रहा है। इस दिशा में पंडित दीनदयाल उपाध्याय किसान बागबान एवं दूध गंगा परियोजनाएं महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी।

पॉलीथीन-वरदान या अभिशाप

जगमग जग हो, जीवन में बसंत हो।

न बनो भुजंग, आओ! शेष मानव पुष्पों को बीन लो।

हम भौतिकवाद, उपभोक्तावाद, वैज्ञानिक युग में जीवन यापन कर रहे हैं। आए दिन नये-नये आविष्कार हो रहे हैं। इन नूतन आविष्कारों के फलस्वरूप हमारा जीवन अत्यंत सुखमय एवं सुविधाजनक तो हुआ है, लेकिन अभिशाप भी बन गया है। अपने चमत्कारी आविष्कारों के बल पर ही आज मानव प्रकृति को अपनी दासी समझ बैठा है। यही मनुष्य की बहुत बड़ी भूल है। आधुनिकता की दौड़ में जब-जब प्रकृति की सार्वभौमसत्ता को नकारने का प्रयास किया है तब-तब उसे प्रकृति के विकराल रूप और उसकी भयंकरता का कोप भाजन बनना पड़ा है। प्रकृति के इस रौद्र रूप के समक्ष बड़े-बड़े वैज्ञानिक एवं उनके आविष्कार पंगु हो जाते हैं और समस्त मानवता को महा विनाश का सामना करना पड़ता है। प्रकृति से लिया ही लिया, दिया तो गंदगी रूपी जहर। जब यही प्रकृति अपने हिसाब किताब करने लग जाये तो सांसारिक मनुष्य से अपने दिये हुए उपहार चन्द क्षणों में वापिस ले लेती है। कभी सुना कि मनुष्य ने प्रकृति एवं पृथ्वी माता को उसके दिये सोना- चांदी लौटा दिये। हम प्रकृति के गुनाहगार हैं तो सजा तो फिर भुगतनी ही पड़ेगी। यह सजा हमें भयंकर सूखा, कैंसर, बाढ़, ग्लोबल वार्मिंग, बर्ड फ्लू, स्वाइन फ्लू जैसे असाध्य बीमारियों के रूप में मिल रही है। इन बुरे हालातों के लिए हम मनुष्य ही जिम्मेदार हैं। आखिर वैज्ञानिक तरीकों के सहारे कितने दिनों-सदियों तक चलते रहेंगे? अपने हाथों खुद अपना शिकार कर रहे हैं और दे रहे हैं जहर वनस्पतियों और जंगली जीव-जंतुओं को भी।

आज पॉलीथीन यानि प्लास्टिक का प्रयोग एक अभिशाप के रूप में बनकर आया है। वैज्ञानिक शब्दावली में प्लास्टिक एक समन्वित सामग्री है जो कि न तो रबड़ है और न ही फाइबर परन्तु इनका ही एक उपनाम है। पॉलिमयर भी प्लास्टिक है। यह प्लास्टिक की कच्ची सामग्री है। पॉलिमयर की प्राप्ति एस्टीलिन गैस से होती है। परिणामस्वरूप पॉलीथीन के भिन्न-भिन्न रूप प्रयोग करके भिन्न-भिन्न प्रकार की प्लास्टिक की वस्तुएं तैयार की जाती हैं। प्लास्टिक की खोज सबसे पहले 1862 ई. में ब्रिटिश वैज्ञानिक अलेक्जेंडर पॉर्कस ने की थी।

मनुष्य ने जब अपने आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सर्वसुविधा, सम्पन्नता के रूप में पॉलीथीन का आविष्कार किया तो उसने पाया कि यह पॉलीथीन तो हमारे लिए वरदान है, जिसे मनचाहे रूप में प्रयोग किया जा सकता है और यह स्वप्न सच साबित हुआ। पॉलीथीन का प्रयोग करते-करते सभी भूल गये कि इसका इस्तेमाल कैसे करना है ताकि यह हमारे लिए अभिशाप न बन जाये। आज जिधर दृष्टि जाती है उधर ही पॉलीथीन नजर आती है। नदी, नालों में तो पॉलीथीन के लिफाफे अक्सर नजर आते हैं, लेकिन खेतों और जंगलों को भी नहीं बख्शा जा रहा है। बड़ी से बड़ी कम्पनी के उत्पादों से लेकर सब्जी व मूंगफली के ठेलों तक पॉलीथीन का साम्राज्य है। सरकार को पॉलीथीन के दुष्परिणामों को देखते हुए जनहित में इसके उत्पादन, प्रयोग एवं उपभोग पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए बाध्य होना पड़ा है तथा इसका उत्पादन, उपयोग तथा प्रयोग एक दण्डनीय अपराध घोषित किया है। फिर भी लुका-छिपी में पॉलीथीन का प्रयोग हो ही रहा है। प्लास्टिक की बोतलें, बूट-चप्पल, बैल्ट, रिफाइंड तेल के पाऊच, बिस्कुट, कुरकुरे आदि के लिए पॉलीथीन किसी न किसी रूप में प्रयोग में बरकरार है।

पॉलीथीन को एक सस्ता एवं सर्वसुलभ साधन समझा जाता रहा है। मनुष्य इसके प्रयोग के पश्चात इसे इधर-उधर फैंक देते हैं। परन्तु यह पॉलीथीन प्रकृति में नष्ट नहीं हो पाती, वर्षों तक मिट्टी में दबी होने के बाद भी यह अपने मूल स्वरूप में बनी रहती है। इसी कारण यह आज पर्यावरण प्रदूषण में अपनी मुख्य नकारात्मक भूमिका निभा रही है। एक ओर इससे भूमि की उर्वरता नष्ट हो रही है वहीं नालियों, सीवर लाइनों में अवरोध के कारण चारों ओर गंदगी का आतंक फैलता जा रहा है, परिणामस्वरूप मच्छरों का आतंक बढ़ रहा है और यह मलेरिया व डेंगू बुखार जैसी महामारियों ने अपना घर बसा

सप्यार सिंह ठाकुर

पॉलीथीन को एक सस्ता एवं सर्वसुलभ साधन समझा जाता रहा है। मनुष्य इसके प्रयोग के पश्चात इसे इधर-उधर फैंक देते हैं। परन्तु यह पॉलीथीन प्रकृति में नष्ट नहीं हो पाती, वर्षों तक मिट्टी में दबी होने के बाद भी यह अपने मूल स्वरूप में बनी रहती है।

लिया है। स्वास्थ्य विभाग को इन महामारियों से निपटने क लिए चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। जनसाधारण को अपनी स्वास्थ्य की चिंता बढ़ती जा रही है। यदि पॉलीथीन व कूड़ा-कर्कट एक ही स्थान कूड़ेदान में फैंका जाता तो शायद पॉलीथीन की वस्तुओं को कुछ हद तक नियंत्रित करके सकारात्मक परिणाम हो सकते थे।

एक समय था जब ये पॉलीथीन के लिफाफे न थे तब भी तो मानव जीवन उन्नति पर अग्रसर था। हमारे बुजुर्ग दुकान, घराट से राशन सामग्री लाने के लिए कपड़े के थैले, थैलियों का प्रयोग करते थे। हर सामग्री के लिए पहले से ही कपड़े की ये थैलियां बनाई होती थी। पुरुष जहां कहीं भी काम पर जाते थे, उनके कंधे पर कपड़े का लम्बा सा थैला अक्सर लटका रहता था ताकि किसी प्रकार की खाद्य सामग्री या काम की वस्तु के लिए थैले का प्रयोग किया जा सके। अब न तो वे घराट रहे न वैसे दुकानदार, ग्राहक क्योंकि वे सभी पॉलीथीन में आधुनिक जो हो गये हैं। कागज, कपड़े की ये थैलियां हमारे यहां गांव-गांव, गली- गली में चलने वाले कुटीर उद्योगों में बनायी जाती थी। इन्हीं उद्योगों से करोड़ों लोगों की रोजी-रोटी चलती थी। दुर्भाग्यवश पॉलीथीन के आगमन से इन कुटीर उद्योगों पर कुठाराघात हुआ है और ये उद्योग बंद हो गये जिससे लाखों लोग बेरोजगार हो गये। कारण स्पष्ट है क्योंकि पॉलीथीन का उत्पादन बड़ी फैक्टरियों में मशीनों के द्वारा होता है। कुटीर उद्योगों का केन्द्रीयकरण हो गया और पूंजीपतियों को ही लाभ मिलने लगा। पॉलीथीन के प्रयोग ने राष्ट्रपिता महात्मा बांधी के सपने को चकनाचूर कर दिया है। उन्होंने कहा था कि भारत गांवों में बसता है एवं इसकी अर्थव्यवस्था कृषि एवं कुटीर उद्योगों पर निर्भर है। अब तो पॉलीथीन ने शहरों से लेकर गांवों तक अपने पांव पसार लिये हैं।

असली भारत गांवों में बसता है। गांवों में 80 प्रतिशत जनता निवास करती है। कृषि हमारा प्रधान व्यवसाय है। स्वस्थ्य कृषि, स्वस्थ पशु हमारी अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं, परन्तु पर्यावरण में इधर-उधर पड़ी पॉलीथीन को अबोध पशु खाकर अपनी भूख शांत करने का प्रयास करते हैं तो यही पॉलीथीन उनके बीमार होने तथा उनकी मृत्यु का कारण बन जाता है। शहरों में तो हालात और खराब हैं। अधिकतर पशु इस हानिकारक पॉलीथीन को खाकर असमय ही तड़प-तड़प कर मर जाते हैं। जहां एक ओर हमारा पशुधन नष्ट हो रहा है, वहीं हमारी अर्थव्यवस्था भी प्रभावित हो रही है। समय की मांग है कि पॉलीथीन पर प्रतिबन्ध ही उचित है।

प्लास्टिक पर्यावरण के लिए अत्यधिक घातक है। प्लास्टिक में हाईड्रोकार्बन होता है यही कैंसर जन्य होता है। प्लास्टिक के जो अणु वजन में हल्के होते हैं वे पानी में घुल जाते हैं और हमारे शरीर में पहुंच कर हानि पहुंचाते हैं। प्लास्टिक निर्माण में प्रयुक्त होने वाली पॉलीथिलीन ट्रिप्थेलेट जब विखंडित होता है तो डाइथी लेक्सीलेडीपेट पृथक होकर जल से अभिक्रिया करता है और कैंसर का कारण बनता है। इस दशक में प्लास्टिक ने उन क्षेत्रों में भी अपनी पैठ बना ली जहां वह प्रयोग नहीं होती थी। इसके प्रयोग को सीमित करने हेतु कारगर उठाने लाजमी हैं।

बात करें हिमाचल प्रदेश की तो यह पॉलीथीन मुक्त राज्य बनने की ओर अग्रसर है। पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से हिमाचल प्रदेश सरकार पॉलीथीन व प्लास्टिक के प्रयोग पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने जा रही है। प्रदेश सरकार के इस कारगर निर्णय से राज्य में विक्रेताओं, रेहड़ी वालों, दुकानदारों, तथा आम लोगों द्वारा पॉलीथीन तथा प्लास्टिक थैलों और एक बार प्रयोग होने वाले प्लास्टिक से बने डिस्पोजेबल रूपी गिलास और प्लेट जैसे पदार्थों के प्रयोग को बंद करने में सहायता मिलेगी और गंदगी का समाधान भी होगा। कुछ वर्ष पूर्व हिमाचल प्रदेश सरकार ने बायोडिग्रेडेबल अधिनियम, 1995 बनाया था जिसके तहत कूड़ा-कर्कट के प्रबन्धन को सुनिश्चित बनाने के लिए सार्वजनिक स्थलों, नालियों, सड़कों तथा खुले में कूड़ा-कर्कट फैंकने पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाया गया है। 70 माइक्रोन से कम मोटाई व 12'' x 18'' आकार के पॉलीथीन थैलों के प्रयोग पर पहले ही प्रतिबन्ध लगाया गया है।

परन्तु प्रतिबन्ध के बावजूद पॉलीथीन लिफाफे धड़ल्ले से चोरी छिपे बिकते रहे हैं। लोगों में नैतिकता की कमी देखते हुए और कानून का उल्लंघन होने पर अब सरकार को पॉलीथीन और प्लास्टिक के प्रयोग पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने हेतु मजबूर होना पड़ रहा है। लोगों को नैतिकता से पेश आना चाहिए और उन्हें लिफाफा चाहिए या जिन्दगी की सलामती, नहीं तो जीवन लिफाफा बन कर रह जायेगा।

आज तक हर शख्स ने प्रकृति से लिया ही है। प्रकृति और पर्यावरण व्यापी हैं। इस पर मानवीय अत्याचार अत्यधिक बढ़ा है जिससे पर्यावरण का चेहरा क्रोध से लाल है। आज विश्व में स्वाइन फ्लू की मार झेल रहे हैं। ऐसे रोगों की कभी कल्पना भी नहीं की होगी। ये असाध्य रोग हमारी जीवन लीला को मिनटों में नहीं क्षणों में लील जायेंगे। अत: पर्यावरण को किसी प्रकार का नुकसान बर्दाश्त नहीं है। अमीर और गरीब देशों को पर्यावरण के प्रति सहयोगात्मक दृष्टि रखनी होगी। एक दूसरे को दोषी ठहराना उचित नहीं है क्योंकि सभी प्रकृति के खजाने को लूट रहे हैं। हालांकि अमीर देश अपनी तरक्की के लिए पर्यावरण को सबसे ज्यादा दोनों हाथों से लूटते आ रहे हैं। दोषी का ठिकरा गरीब व बहुल जनसंख्या वाले देशों पर मड़ दिया जाता है। पॉलीथीन प्लास्टिक भी पश्चिमी देशों की देन है। फिर दोषी कौन? दोषी हैं पूंजीपति लोग जिनकी पॉलीथीन प्लास्टिक से दुकानदारी चली हुई है। दोषी है इसके भोगी। भविष्य के मंसूबे बनाने वाला आदमी, वर्तमान से डर गया है कि न जाने कौन सा फ्ले एक दिन निगल जायेगा।

पॉलीथीन के लिफाफे, कैरी बैग, बोतलें, पाऊच आदि को लोग सस्ते समझते हैं। वे इस बात से अनभिज्ञ हैं कि यह हमारे स्वास्थ्य के लिए अति हानिकारक हैं। बार- बार पॉलीथीन को बनाते समय उसमें मिलाये जाने वाले हानिकारक रसायन किसी न किसी तरीके से हमारे शरीर के अंदर प्रवेश करके अनेक भयंकर रोगों का कारण बनते हैं। खेतों में मिट्टी कम पॉलीथीन अधिक हो गई है। जहां एक ओर सूखे की मार झेल रहे हैं, वहीं पॉलीथीन खेतों के लिए कैंसर जैसी बीमारी सिद्ध हो रही हैं। तेज हवा के चलते पॉलीथीन के लिफाफे खेतों, जंगलों, नदी- नालों में फंस कर रह जाते हैं। ये लिफाफे धरती की उर्वरता तथा शक्ति को क्षीण करते हैं। बरसात के दिनों में जंगलों में पेड़ गिरते रहते हैं क्योंकि अधिक लिफाफे होने के कारण आसपास दूसरे पेड़ नहीं उग पाते जो मिट्टी को अपनी जड़ों में जकड़े रहते हैं। प्लास्टिक का विकल्प ढूंढना होगा ताकि पर्यावरण सुरक्षित रह सके। खाद्य सामग्री के लिए तो प्लास्टिक बिल्कुल वर्जित होना चाहिए। कुछेक कार्यों के लिए तो प्लास्टिक प्रयोग में लाई जा सकती है। लेकिन सावधानी के साथ ही इसका उपयोग होना चाहिए। लेकिन यह सरकार के देखरेख व उपयोग तक ही सीमित हो अन्यथा नहीं। भेड़चाल अपनायेंगे तो पॉलीथीन के भेड़िये खा जायेंगे। मौत के रास्ते न अपनायें बल्कि प्रकृति की ओर लौटो, कागज और कपड़े की थैलियों को अपनाओ जिनसे कुटीर उद्योगों को बल मिलेगा। रोजगार के अवसर खुलेंगे। पर्यावरण सुरक्षित तो जीवन सुरक्षित वाली धारणा चरितार्थ होगी। आईये! पॉलीथीन मुक्त करें समाज को, जिन्दगी सलामत रहे, कचरा न बनायें।

सब्जी की नई किस्म-ब्रोकोली

आर्थिक दृष्टि से सब्जियों की खेती काफी महत्वपूर्ण है। मांग और देशी-विदेशी पर्यटकों की इच्छा एवं आवश्यकता को मद्देनजर रखते हुए विदेशी सब्जियों की उपलब्धता भी आवश्यक हो गई है। इन सब्जियों की खपत अभी तक विशेष रूप से पांच सितारा होटल तथा पर्यटन स्थलों में है, जहां विदेशी पर्यटक आते-जाते हैं। इन सब्जियों के दाम आम सब्जियों के मुकाबले अक्सर 5 से 10 प्रतिशत तक अधिक होते हैं। इन्हीं सब्जियों में से एक है-ब्रोकोली।

ब्रोकोली तीन प्रकार की होती है- हरी, सफेद और बैंगनी। हरी ब्रोकोली अधिक प्रचलित है। इसमें सबसे अधिक पोषक तत्व पाये जाते हैं। इसका उपयोग कैंसर जैसे भयंकर रोग विशेषकर पेट के कैंसर की रोकथाम के लिए भी उपयोगी है। प्रति 100 ग्राम ताजा ब्रोकोली में निम्न तत्व पाये जाते हैं:-

विटामिन ए	9000 आई.यू.
विटामिन बी-1	33 मि.ग्रा.
विटामिन सी	137 मि.ग्रा.
प्रोटीन	3.3 ग्राम
कार्बोहाइड्रेट	5.5 ग्राम
वसा	0.2 ग्राम
लोहा	2.05 मि.ग्रा.
कैल्शियम	1.25 मि.ग्रा.
तांबा	24 मि.ग्रा.
गंधक	1.26 मि.ग्रा.
आयोडीन	1.97 मि.ग्रा.
पोटाशियम	3.53 मि.ग्रा.
कैलोरी ऊर्जा	37 कैलोरी

भूमि तथा जलवायु-ब्रोकोली की खेती के लिए रेतीली दोमट भूमि या वह भूमि जिसमें सड़ी गली गोबर की खाद पर्याप्त मात्रा में हो क्योंकि इस सब्जी को जैविक खाद की अधिक आवश्कता पड़ती है। भूमि में जल निकास का उचित प्रबन्ध तथा भूमि की पीएच मान 6 से 6.8 हो, इसकी खेती के लिए सर्वोत्तम है। इसकी खेती शरद ऋतु में की जा सकती है। इसके बीज अंकुरण तथा उत्तम विकास के लिए तापमान क्रमश: 25 डिग्री से 30 डिग्री और 16 से 20 डिग्री सें. होना चाहिए।

किस्में-हमारे देश में इस सब्जी पर अनुसंधान कार्य कम होने के कारण अधिकतर किस्में विदेशों से आयातीत की गई है, जो निजी बीज विक्रेताओं के पास उपलब्ध है। इनके अलवा जो मुख्य किस्में प्राय: काम में ली जा रही है उनमें इटालियन ग्रीन तथा ग्रीन हैड है। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय केन्द्र कटाराई द्वारा पूसा ब्रोकोली की टीएस 1 किस्म विकसित की गई है।

ब्रोकोली की पौध तैयार करना-ब्रोकोली का बीज बारीक तथा महंगा होता है इसलिए इसकी पौध तैयार करते समय सावधानी रखनी चाहिए, जिससे स्वस्थ पौध तैयार हो सके। इसकी पौध तैयार करने के लिए बीजों को अक्तूबर माह में प्रथम सप्ताह से अंतिम सप्ताह तक नर्सरी में बोये जा सकते हैं। इसके लिए जहां पौध तैयार करनी है, उस भूमि में अच्छी सड़ी गोबर की खाद डालकर अच्छी तरह तैयार कर लें। नर्सरी की क्यारियों की चौड़ाई आधा मीटर, ऊंचाई 15 से 20 सेंटीमीटर तथा लम्बाई इच्छा के अनुसार रखें। दो क्यारियों में बीच की दूरी लगभग 40 से 45 सेंटीमीटर तक रखनी चाहिए। साधारणतया एक हेक्टेयर भूमि की पौध तैयार करने के लिए 70 से 80 वर्ग मीटर भूमि तथा 400 से 500 ग्राम बीज की आवश्यकता पड़ती है। बीज को नर्सरी में कतारों में बोना चाहिए और बुवाई के बाद मिट्टी या बारीक गोबर की खाद से ढंक देना चाहिए और फव्वारों से पानी देते रहना चाहिए। इस प्रकार रोपाई के लिए पौध लगभग 4 से 6 सप्ताह में तैयार हो जाती है।

खेत में पौध रोपाई-ब्रोकोली की पौध लगभग 4 से 6 सप्ताह खेत की क्यारियों में पंक्तियों में 45 सें.मी. तथा पौधे से पौधे के बीच 30 से 45 सें.मी. का अंतर देकर रोप दिया जाता है।

खाद एवं उर्वरक-अच्छी पैदावार के लिए 30 से 40 टन गोबर की खाद प्रति हैक्टेयर पौध रोपाई के 15 दिन बाद खेत में मिला दें। उर्वरकों में नत्रजन 150 से 200 कि.ग्रा., फॉस्फोरस 80 से 120 कि.ग्रा. तथा पोटाश 100 से 125 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर की दर से दें। इनमें नत्रजन की आधी मात्रा तथा फास्फोरस व पोटाश की दूसरी मात्रा पौध रोपाई से पहले ही खेत में मिला दें। शेष आधी बची नत्रजन की मात्रा पोध लगाने के 35-35 दिन बाद दो बराबर भागों में बांटकर खड़ी फसल में सिंचाई करते समय दें। इनके अलावा सूक्ष्म तत्वों का छिड़काव करने से भी फसल की पैदावार बढ़ाई जा सकती है।

ब्रोकोली की कटाई-पौध रोपाई के लगभग 70 से 75 दिन बाद फसल कटाई के लिए तैयार हो जाती है। इसमें पहले पौधे के बीच में हरे रंग की छोटी-छोटी फूल की कलियां तैयार होती है, ये कलियां एक सख्त कलियों का छत्ता (बंद) जैसा बनाती है। जो खिलकर फूल बनने से पहले खाने के लिए काट ली जाती हैं। अगर कलियां फूल खिला दें तो ब्रोकोली खाने लायक नहीं रहती।

सनरेन्द्र देवांगन

हर शनिवार सजता है बाजार

सरकार तथा विभिन्न विभागों से मिले प्रोत्साहन से जिला मण्डी में गठित स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं ने अपने आर्थिक उत्थान के लिए स्वरोजगार को अपनाने में प्राथमिकता दी है। जिला में कुल 8728 स्वयं सहायता समूह हैं जिनमें अधिकतर भागीदारी महिलाओं की है। महिलाओं द्वारा निर्मित उत्पाद को प्राथमिकता प्रदान की है जिसमें चटनी, आचार, ऊनी वस्त्र, बांस की टोकरियां, बड़ियां, सीरा, सेंवियां, जूस, दलिया, बुरांस के फूलों का शर्बत, ब्रह्मी जूस, अनारदाना आदि ऐसे उत्पाद हैं, जिन्हें महिलाएं घर में ही तैयार कर रही हैं जबकि घी, मक्खन, स्थानीय दालें, कोदे का आटा, शहद, तेल के लैम्प, फलदार पौधे इत्यादि उत्पादन को भी स्वरोजगार से जोड़ कर अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत कर रही हैं। स्वयं सहायता समूहों को प्रोत्साहित करने व उनके द्वारा तैयार उत्पादों के विक्रय व लोकप्रिय बनाने के लिए जिला प्रशासन द्वारा मण्डी शहर से मध्य में स्थित सेरी मंच उपलब्ध करवाया गया है जहां स्वयं सहायता समूह अपने- अपने उत्पाद का स्टाल हर शनिवार को लगाते हैं। इन स्वयं सहायता समूहों द्वारा तैयार बड़ियां, सेंविया, सीरा, आचार चटनी इत्यादि शहरवासियों के अतिरिक्त सैलानियों में भी काफी लोकप्रियता प्राप्त कर चुका है। शनिवार को सेरी मंच पर स्टाल लगते ही ग्राहक अपने आप स्टालों के इर्द-गिर्द इकट्ठा होकर इन स्थानीय उत्पादों को क्रय करने में अपनी उत्सुकता को प्रदर्शित कर रहे हैं।

'सेरी मंच' पर लगने वाले इस बाजार में स्वयं सहायता समूहों द्वारा उत्पादित सामान को बेचकर महिलाओं ने अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत किया है।

सेरी मंच पर अपने उत्पाद विक्रय करने में हमेशा तत्पर स्वयं सहायता समूहों में श्यामाकाली स्वयं सहायता समूह, शिक्षा स्वयं सहायता समूह तल्याहड़, नवकिरण स्वयं सहायता समूह गागल तथा जालपा स्वयं सहायता समूह बिन्द्रावणी सबसे अग्रणी है। स्वयं सहायता समूहों में सम्मिलित महिलाओं का कहना है कि अपने हाथों से बनाई गई खाद्य वस्तुएं तैयार करने से उन्हें स्वरोजगार के अवसर मिले हैं जिससे उनकी आर्थिकी समृद्ध भी हुई है। आय के स्रोत बन जाने से उनकी अपनी दैनिक जरूरतें भी पूरी हो रही हैं। उपायुक्त मण्डी श्री ओंकार शर्मा ने बताया कि स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं के हाथों द्वारा विभिन्न उत्पादों की लोकप्रियता को देखते हुए तथा समूहों को प्रोत्साहित करने के लिए सेरी मंच उत्पादों के विक्रय के लिए उपलब्ध करवाया गया है। उन्होंने बताया कि जिला में 8789 स्वयं सहायता समूह गठित हैं जिनमें से 6710 समूहों को बैंकों से जोड़ा गया है। इन समूहों का वर्तमान में 35 करोड़ रुपये का करोबार हो रहा है।

-के.सी. चौहान

हरित क्रांति के प्रणेता डॉ. बोरलॉग

हरित क्रांति के क्षेत्र में जिन्होंने महत्वपूर्ण कार्य किया उनमें अमेरिका के कृषि वैज्ञानिक डॉ. नॉमर्न अर्नेस्ट बोरलॉग का नाम विकासशील दुनिया के आर्थिक इतिहास में हमेशा याद रखा जायेगा। वे इस महान क्रांति के जनक थे। डॉ. वोरलॉग ने अत्याधुनिक पौध प्रजनन के जरिये लातीनी अमेरिका व एशिया में प्रति इकाई क्षेत्र उत्पादन बढ़ाकर पिछड़े कृषि इलाकों की गरीबी और भूखमरी को दूर किया है। उनकी निरन्तर कोशिशों की वजह से प्रथमत: करीब 25 करोड़ की आबादी को अकाल और भूखमरी का शिकार होने से बचाया जा सकता था। गत 12 सितम्बर को जब डलास शहर में स्थित उनके निजी आवास तक उनकी कैंसर से मृत्यु हुई तो न केवल अमेरिका अपितु पूरे विश्व के लोगों ने उनके निधन पर शोक मनाया। दक्षिणी एशिया के किसानों के लिए वे एक मसीहा की तरह थे।

अपने पचास वर्षीय कार्यकाल में उन्होंने दुनिया के लोगों को स्वपोषण की कारगर तरकीबें सिखाई। भारत का अन्न भण्डार माना जाने वाला पंजाब, जहां का किसान पारम्परिक प्रणाली द्वारा प्रति हेक्टेयर केवल 12 क्विंटल अन्न की उपज ही पैदा कर पाता था, उनकी नयी तकनीक और बेहतरीन प्रजाति के बीजों के इस्तेमाल से आज 47 क्विंटल उत्पादन लेने के योग्य हुआ है। कृषि क्षेत्र में यह एक अभूतपूर्व उपलब्धि है जिसने हमें गेहूं व इतर खाद्यान्नों के आयात की जहमत से बचाया है।

डॉ. नॉर्मन ई. बोरलॉग 25 मार्च, 1914 को अमेरिका के क्रेस्को आयोवा में पैदा हुए। मिन्नेसोटा विश्वविद्यालय से 1942 में उन्होंने पादप रोम विज्ञान एवं आनुवंशिकी में पीएचडी की डिग्री प्राप्त की। मैक्सिको में उन्होंने उसके बाद गेहूं की विभिन्न प्रणालियों पर अनुसंधान किया और फलत: इसकी बौनी, ज्यादा उत्पादक और रोगरोधी किस्मों का विकास करने में कामयाब रहे। बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में डॉ. बोरलॉग ने भारत, मैक्सिको व पाकिस्तान में इन प्रजातियों को स्थानीय किसानों के सहयोग से प्रयोग में लाया जिसके फलस्वरूप ये देश न केवल अनाज उत्पादन में आत्म निर्भर हुए अपितु 1963 में वे निर्यात के योग्य भी हो सके। 1965 और 1970 के मध्य भारत और पाकिस्तान में गेहूं का उत्पादन दुगना हो गया था जिसने इनके खाद्य अभावों को पूरा कर यहां के सामान्य लोगों को खाद्य सुरक्षा प्रदान की। सामूहिक उत्पादन में वृद्धि के कारण आज तक करीब एक अरब आतुर लोगों को विश्व भर में भूखमरी से बचाया जा सका है और औसतन वार्षिक उपलब्धता भी सामान्य बनी रही है।

वर्ष 1970 में अन्न उत्पादन में हुई वृद्धि के लिए डॉ. नॉर्मन ई. बोरलॉग को नोबेल शांति पुरस्कार से नवाजा गया था क्योंकि उनका यह भूमण्डलीय अभियान विश्व शांति का एक अग्रदूत था। डॉ. बोरलॉग ने विश्व में हरित क्रांति को सकल बनाकर कृषि के क्षेत्र में एक मिसाल कायम की है। उनका अनुसंधान केवल वैज्ञानिक प्रयोगशाला का अनउपजाऊ ज्ञान ही न बना रहकर लक्षित किसानों और उनके खेतों तक पहुंचा है जिससे उत्पादन के साथ- साथ वन सम्पदा की भी सुरक्षा हो सकी है। अर्थात् अधिक उत्पादन के लिए अब और ज्यादा वन क्षेत्र को क्लेम करने की जरूरत नहीं रही। हमारे वैज्ञानिको को भी ऐसे अनुसंधान से सबक हासिल करना चाहिए। प्रयोग के बाद उसका कार्यान्वयन और विस्तार आवश्यक है वर्ना सारा ज्ञान कालान्तर में कम्प्यूटरों में बद रहकर अपना क्रियात्मक लक्ष्य कभी प्राप्त नहीं कर पायेगा। हरित क्रांति के जनक डॉ. नॉर्मन अर्नेस्ट बोरलॉग विश्व के उन पांच व्यक्तियों में से हैं जो अब तक नोबेल अकादमी द्वारा शांति पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। केन्द्रीय सरकार ने उन्हें भारत में उनकी सफलताओं के लिए पद्म विभूषण से सम्मानित किया था। उनके नाम पर टेस्सास ए. एण्ड एम. विश्वविद्यालय के अंतर्गत एक अंतर्राष्ट्रीय कृषि संस्थान और एक फसल सुधार केन्द्र तथा कृषि विज्ञान और प्रौद्योगिकी केन्द्र फैलों कार्यक्रम भी कार्यरत है। अब हरित क्रांति के दूसरे चरण का समय आ गया है जिस ओर कृषि वैज्ञानिकों और विश्व की सरकारों को अवश्य ही ध्यान देना चाहिए।

-श्रीनिवास श्रीकांत

स्वां नदी समन्वित जलागम प्रबन्धन परियोजना ने खोले समृद्धि के द्वार

ऊना जिला की 95 ग्राम पंचायतों के 61900 हेक्टेयर क्षेत्र में जापान अंतरराष्ट्रीय सहकारिता एजेंसी के वित्तीय सहयोग से कार्यान्वित की जा रही स्वां नदी समन्वित जलागम प्रबंधन परियोजना के उत्साहवर्धक परिणाम देखने को मिल रहे हैं। ऊना जिला में वर्ष 2007-08 में 15 ग्राम पंचायतों में आरम्भ की गई इस परियोजना के तहत मार्च 2009 तक वनीकरण, भू- संरक्षण, जल प्रबंधन तथा आजीविका सुधार गतिविधियों पर 23.3 करोड़ रुपये खर्च किए जा चुके हैं तथा इस वर्ष परियोजना की विभिन्न गतिविधियों पर 20 करोड़ रुपये खर्च किए जा रहे हैं। जिला में 1.50 करोड़ रुपये की लागत से ऊना, गगरेट तथा अम्ब क्षेत्रों में 21 जल संग्रहण ढांचों का निर्माण किया गया है।

ऊना जिला के टकराला गॉव निवासी श्री करतार चंद आज अपने आप को भाग्यशाली मानते हैं। परियोजना के तहत सिंचाई तालाब का निर्माण कर उन्होंने अपनी समस्त कृषि भूमि को सिंचाई सुविधा के अंतर्गत लाने में सफलता प्राप्त की, जिससे उसकी कृषि फसल की उत्पादक क्षमता में कई गुणा वृद्धि हुई है।

ऊना जिला के इसी गांव के एक अन्य किसान हबीब मोहम्मद ने परियोजना के तहत सिंचाई तालाब का निर्माण कर अपनी 66 कनाल कृषि योग्य भूमि को सिंचाई सुविधा के अंतर्गत लाया। उनके इस सफल प्रयास से न केवल कृषि उत्पाद में आशातीत वृद्धि हुई बल्कि उनकी आमदनी में भी कई गुणा बढ़ोतरी हुई है।

जिले की नंगनोली ग्राम पंचायत में इस परियोजना के तहत भू एवं नमी संरक्षण, वनीकरण जैसी गतिविधियॉ आरम्भ की गई हैं, जिससे भूमिगत जल स्रोतों को रिचार्ज करने में काफी सफलता मिली है। इस परियोजना के तहत चलाई जा रही जलग्रह क्षेत्र प्रबंधन गतिविधियों से गांववासी लाभान्वित हो रहे हैं। क्षेत्र के सूखे कुओं में भी जल स्तर 4 फुट दर्ज किया गया है, जिससे 40 परिवार लाभान्वित हो रहे हैं। गांववासियों द्वारा स्थापित पंपिंग सैट को प्रतिदिन 14 से 15 घंटों तक संचालित करने के बावजूद भी इनमें पानी का जल स्तर बरकरार रहता है। गांववासियों के लिए यह किसी वरदान से कम नहीं है कि पर्याप्त मात्रा में जल की उपलब्धता से आज वे अपने आप को बहुत खुशनसीब महसूस कर रहे हैं।

ऊना जिला के टकराला गॉव निवासी श्री करतार चंद आज अपने आप को भाग्यशाली मानते हैं। परियोजना के तहत सिंचाई तालाब का निर्माण कर उन्होंने अपनी समस्त कृषि भूमि को सिंचाई सुविधा के अंतर्गत लाने में सफलता प्राप्त की, जिससे उसकी कृषि फसल की उत्पादक क्षमता में कई गुणा वृद्धि हुई है।

इस परियोजना के बेहतर कार्यान्वयन, प्रबंधन तथा समन्वय के कार्य को कारगरता से अंजाम देने का दायित्व वन विभाग को सौंपा गया है। विभाग द्वारा इस परियोजना के अंतर्गत वनीकरण, वन भूमि में भू संरक्षण एवं नदी प्रबंधन कार्य, आजीविका सुधार गतिविधियों तथा संस्थागत निर्माण का समग्र प्रबंधन व परामर्श सेवाएं जैसे कार्य किए जा रहे हैं। परियोजना के तहत कृषि, बागवानी, पशुपालन, सिंचाई एवं जन स्वास्थ्य तथा ग्रामीण विकास विभाग भी अपना योगदान बखूबी निभा रहे हैं। इन विभागों को नई प्रौद्योगिकी के माध्यम से कृषि उत्पादकता में सुधार लाने, किसानों को प्रशिक्षित एवं जागरूक करने गै़र वन भूमि में नदी प्रबंधन एवं भू संरक्षण विकास कार्यों के अतिरिक्त कृषि, बागवानी, पशुपालन, सिंचाई एवं जन स्वास्थ्य तथा ग्रामीण विकास क्षेत्रों में संस्थागत विकास का कार्य सौंपा गया है।

कभी दु:खों की नदी के नाम से विख्यात स्वां नदी के अधिकतर जलग्रह क्षेत्र (कैचमेंट एरिया) में शिवालिक पहाड़ियों का ऐसा क्षेत्र शामिल है, जिसमें हरित आवरण के स्थान पर उबड़-खाबड़ ज़मीन व व्यर्थ निजी भूमि शामिल है। स्वां नदी के जलग्रह क्षेत्र में कम हरित आवरण तथा कृषि गतिविधियों के न होने के कारण ही इसने विकराल रूप धारण किया है। क्षेत्र की बिगड़ी अर्थव्यवस्था के लिए भी काफी हद तक यह नदी ज़िम्मेदार है। यह नदी वर्षा ऋतु के दौरान अकसर विकराल रूप धारण कर अपना रास्ता बदल लेती है तथा बाढ़ की स्थिति में हर वर्ष लोगों को अपनी उपजाऊ कृषि भूमि से हाथ धोना पड़ता है।

सतत् वन प्रबंधन प्रयासों को सुनिश्चित बनाने में जलागम प्रबंधन का महत्वपूर्ण योगदान है तथा प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन कार्यक्रमों विशेषकर वानिकी कार्यक्रमों के बेहतर कार्यान्वयन में भी जलागम अवधारणा लाभप्रद साबित हो रही है, जो स्वां नदी भू-कटाव को रोकने तथा जलग्रह क्षेत्र में वनीकरण गतिविधियों के संचालन में भी अपनाई जा रही है, ताकि बाढ़ तथा भू-स्खलन जैसी स्थितियों में लोगों को कोई कठिनाई न हो। *(सूजसवि)*

कृपया
सेंटरस्प्रेड
देखें

कहानी

बालिका वधु

जाहिर खान अच्छे खानदान का बांका-सजीला नौजवान था जिनका संयुक्त परिवार सदियों से अफीम की अच्छी खेती करता था। कहीं कोई दिक्कत नहीं थी। उन दिनों अफगानिस्तान सरकार की नीतियां काफी उदार थी। जहीर खान फौज में जाना चाहता था और चाहता था कि गांव के अन्य गर्वीले फौजी अफसरों की तरह उसके चौड़े कंधों पर भी सुनहरे स्टार शोभायमान हों और उसकी हमउम्र लड़कियां उसे भी रश्क की नजर से देखें। अफगानिस्तान के लॅगमान प्रांत के अन्य पशतून कबाइली लोगों की तरह जहीर ऊंची कद काठी, सुर्ख रंग और मजबूत इरादे वाला होनहार नवयुवक था।

जहीर का परिवार उसके फौज में जाने के खिलाफ था। उन दिनों देश में राजनैतिक अस्थिरता थी। रूसी फौजों को निकलने के लिए मजबूर होना पड़ रहा था। तालिबान अपनी पकड़ मजबूत कर रहा था। फौज में जाने का अर्थ था कि अपनी जवानी को दांव पर लगाना। जब खेती में ही इतनी बरकत थी तो फिर भला फौज या कोई दूसरा धंधा पीटने की क्या जरूरत थी।

जहीर अच्छा किसान साबित हुआ। पन्द्रह साल का भी नहीं हुआ था कि उसकी शादी कर दी गई। उसके अन्य पांच भाई पहले से ही शादीशुदा थे। जहीर के अब्बा की अचानक मौत के कारण घर में तूफान आ गया। अब्बा थे तो इतने बड़े परिवार के साथ रखकर चलते थे। अब जहीर के भाइयों में जमीन का बंटवारा कर लिया। जहीर के हिस्से सिर्फ तीन एकड़ जमीन आई। कुछ जमीन बंटाई पर लेकर जहीर खेती में खूब मुनाफा कमाने लगा था। तालिबान सरकार के आते आम किसानों की दुर्दशा के दिन आ गये। तालिबान वैसे तो अफीम और अन्य नशीली वस्तुओं के खिलाफ थे मगर अपनी लड़ाई को जारी रखने के लिए उन्हें ढेरों रुपयों की दरकार थी। अब वे उत्तरी अफगानिस्तान के किसानों को उकसाने लगे कि वे अफीम और हेरोइन की पैदावार ज्यादा से ज्यादा करें ताकि अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में बेचकर तालिबान भी खूब धन बटोर सके। जिन इलाकों पर तालिबान का वर्चस्व था उन किसानों के खेतों की तरफ पुलिस देखने की जुर्रत नहीं कर सकती थी। हर तरफ खुशहाली थी और जहीर मजे से अपने बच्चों का लालन पालन कर रहा था।

अमेरिका के दखल के कारण उत्तरी भाग में तालिबान कमजोर पड़ने लगा। नई सरकार ने अफीम की खेती पर रोक लगानी शुरू कर दी। पुलिस छापे मारने लगी। अफीम माफिया वजूद में आया। जिन किसानों को इस माफिया ने कर्ज दिये व सांठगांठ कर ली, वे खेती करते रहे मगर जहीर जैसे कमजोर किसान जल्दी ही दम तोड़ने लगे। अफीम के इलावा दूसरी खेती करने से उनके घरों के खर्च चलने में परेशान थी क्योंकि अब तक अफीम की खेती से ही उनके बड़े-बड़े परिवारों का गुजर होता था। अफीम माफिया ने जहीर सरीखे किसानों को अपनी गिरफ्त में लेना शुरू किया। खाते- पीते घरों के लोग माफिया के कुचक्र से बचे रहे मगर मध्यम व नीचे दर्जे के किसानों की कमर टूटने लगी। तालिबान और अफीम विरोधी सरकारी अफसरों को खिलाने के लिए उनके पास अब कुछ नहीं बचा था।

कर्ज ले लेकर उन्होंने किसी तरह किसानी करना जारी रखा। कर्ज अब बहुत बढ़ गया और मुश्किल से मिलने लगा तो जहीर खान का ध्यान किसी समय अफीम की तस्करी में अपने साथ पार्टनर रहे शहर के व्यापारी सैयर शाह की तरफ गया। अपनी खेती को एक बार फिर सही तरीके से जमाने के लिए उसने उससे मिलना उचित समझा। सैयद शाह जैसे तस्कर ही पुलिस और तालिबान की सांठगांठ में अपने लोगों को आश्रय दे रहे थे।

जहीर अच्छा किसान साबित हुआ। पन्द्रह साल का भी नहीं हुआ था कि उसकी शादी कर दी गई। उसके अन्य पांच भाई पहले से ही शादीशुदा थे। जहीर के अब्बा की अचानक मौत के कारण घर में तूफान आ गया। अब्बा थे तो इतने बड़े परिवार के साथ रखकर चलते थे। अब जहीर के भाइयों में जमीन का बंटवारा कर लिया।

सजसविंदर शर्मा

सैयद शाह ने बड़ी गर्मजोशी के साथ जहीर की आवभगत की। जहीर ने अपनी खस्ता हालत ब्यान की। जहीर ने पचास हजार रुपयों की मांग कर दी जो सैयद शाह को काफी बड़ी लगी। गिरवी रखने को जहीर के पास कुछ न था क्योंकि अपने हिस्से की जमीन वह दो साल पहले ही अन्य सूदखोरों के पास गिरवी रख चुका था।

सैयद शाह बहुत अनुभवी और चंट व्यापारी थी। उसने जहीर से कहा कि देखो भाई, तुम मुझसे पचास हजार रुपये ले जाओ। मैं कोई ब्याज नहीं लूंगा। पुलिस और तालिबान तुम्हें तंग नहीं करेंगे। बस अफीम की फसल काटने के बाद मुझे पच्चीस किलो अफीम दे देना। ये देखो। मैंने कागजों में यह बात लिख दी है।

पैसे लेकर खुशी-खुशी जहीर घर आया। आधे पैसों से उसने अफीम के बीज व खाद आदि खरीदे और बाकी पैसे घर में लगा दिये। उसे खुद पर भरोसा था कि सैयद शाह को फसल पर पच्चीस किलो अफीम देने में कोई दिक्कत नहीं आयेगी।

पुलिस या तालिबान ने उसे कुछ नहीं कहा मगर मौसम की बेरहम मार के सामने जहीर की खड़ी फसल चौपट हो गई। जहीर के सारे इरादे मिट्टी में मिल गये। वह जानता था कि अफगानिस्तान में जब कोई आदमी अपना कर्ज नहीं उतार पाता तो उसे अपनी जान तक देनी पड़ जाती है। ये कबाइली नियम बहुत ही निर्मम होते हैं। अब या तो उसे आत्म हत्या कर लेनी चाहिए या कहीं भाग जाना चाहिए। सारी जमीन और घर बेचकर भी इतना कर्ज नहीं उतरने वाला। अब तो उसके सामने एक ही रास्ता बचा था कि अपनी बीवी और बच्चों को अपने ससुराल भेजकर वह कहीं लापता हो जाये। रातोंरात वह परिवार समेत जलालाबाद भाग गया। दो-तीन महीने गुमशुदा रहने के बाद उसके साले ने वहां एक फैक्टरी में जहीर को लगवा दिया।

सैयद शाह चुप कहां बैठने वाला था। उसने जहीर के सिर पर बीस हजार रुपयों का ईनाम घोषित करवा दिया। बस कुछ ही दिनों में जहीर का पता चल गया। गांव की पंचायत के सामने उसे लाया गया। पैसे के दम पर सैयद शाह ने अपना प्रभाव दिखाया। जहीर के पास देने को कुछ भी शेष नहीं था। उसका तो सब कुछ पहले से ही गिरवी पड़ा था। अब पंचायत ने सैयद शाह से पूछा कि आखिरकार वह क्या चाहता है।

सैयद शाह के चेहरे पर क्रूर मुस्कान फैल गई। वह बोला कि मैं जहीर मियां को सारा कर्ज मुआफ कर देने को तैयार हूं। मेरी एक शर्त है। जहीर अपनी बड़ी बेटी खालिदा का निकाह मेरे साथ कर दे। मैं न सिर्फ उसका यह कर्ज मुआफ करूंगा बल्कि उसके सारे कर्ज भी अदा कर दूंगा।

जहीर की बेटी सिर्फ दस साल की थी और सैयद शाह साठ साल का बूढ़ा-खूसट। यह बात सुनते ही जहीर खान बेहोश हो गया। अफगानिस्तान के पश्तून कबाइली कौमों में यह एक आम पुराना रिवाज भी था। लड़के का पिता दुल्हन के पिता को दहेज में अच्छी खासी रकम देता था। नंगरैहर और लंगमान इलाकों में यह रकम एक लाख रुपये के लगभग थी मगर दक्षिणी अफगानिस्तान के हैलमंद और कशमंद सरीखे खुशहाल इलाकों में वर के पिता द्वारा दिये गये दहेज की रकम तीन लाख रुपये तक जाती थी।

जहीर की बड़ी लड़की खालिदा उसे सबसे प्यारी लगती थी। वह अपनी बहन से बड़ी थी मगर दो भाइयों से छोटी थी। वह सुन्दर नीली आंखों वाली होनहार और समझदार बच्ची थी। वह तीसरी कक्षा में थी और हर बार पूरी कक्षा में अव्वल आती थी। वह बड़ी होकर टीचर बनना चाहती थी। अब वह एक अभिशप्त बच्ची बन चुकी थी और हर कोई उसे यही समझा रहा था कि यह सब उसकी किस्मत में पहले से ही लिखा था।

गांव की पंचायत के सामने जहीर का यह पहला केस नहीं था। पिछले साल खालिदा की सहपाठिन गुल का विवाह काबुल के एक अफीम स्मगलर के चौदह बरस के बेटे के साथ कर दिया गया था क्योंकि गुल के अब्बा ने अपनी अफीम की खेती बचाने के लिए उस स्मगलर से बहुत सारा रुपये उधार ले रखा था। गुल की किस्मत इस मामले में थोड़ी अच्छी थी कि भरी पंचायत के सामने स्मगलर ने गुल को अपने बेटे के निकाह के लिए मांगा था, खुद अपने लिए नहीं।

दस साल की खालिदा आज के जर्जर अफगानिस्तान की उन हजारों अफीम वधुओं में से एक है जिन्हें विवाह की बलि वेदी पर कुर्बान कर दिया जाता है। वह सिर्फ कहने सुनने की ही बात है कि हर लड़की को यह अधिकार है कि वह फैसला कर सके कि उसका होने वाला पति उसके लायक है या नहीं। खालिदा इतनी मासूम थी कि उसे पता ही नहीं था कि उसके साथ क्या होने वाला है।

उसकी उम्र में लड़कियां अपनी सहेलियों के साथ लुक्का-छिपी खेलकर या गप्पें लगाकर खुश होती हैं। माएं उन्हें लोरियां सुनाकर सुलाती हैं। खालिदा की आंखों ने अभी सपने भी देखने शुरू नहीं किये थे। अपने अब्बा की गोद में बैठकर वह सोचती थी कि सारी दुनिया के तूफानों का वह आसानी से सामना कर सकेगी। कुदरत ने उसके साथ कितना क्रूर मजाक किया था। उसे तीसरी कक्षा से हटा दिया गया और आनन-फानन उसका विवाह उससे छह गुणा ज्यादा उम्र के बूढ़े से कर दिया गया जिसने उसे मारना पीटना शुरू कर दिया था।

खालिदा की सहेली गुल अपने पति से खुश नहीं थी। उसका खाविंद एक कुख्यात स्मगलर का बेटा था। खालिदा अपनी दो अन्य बालिका बधु सहेलियों को जानती थी जिन्होंने आत्म हत्या कर ली थी। उनकी शादी बूढ़े तस्करों के साथ हुई थी। ये लोग इन मासूम लड़कियों को अपने क्रूर अंडरवर्ड डॉन के सामने पेश करते थे।

सैयद शाह भी बहुत बेरहम व जालिम इंसान था। खालिदा ने बहुत बार खुद को खत्म करने की सोची मगर वह जानती थी कि इस्लाम आत्म हत्या की इजाजत नहीं देता। एक दिन उसे घर से भागने का मौका मिल गया। भागकर वह अपने मामा के पास जलालाबाद पहुंच गई। एक वकील करके मामा के कहने पर खालिदा ने अदालत में सैयद शाह से तलाक लेने के लिए अर्जी देने की हिम्मत कर डाली। एक रहमदिल जज ने उसे तलाक के लिए इजाजत दे दी।

खालिदा कल की बालिका वधू और आज की तलाकशुदा आजाद लड़की बनकर पुनः स्कूल जाने लगी। उसने पश्तो, उर्दू तथा अरबी जुबान सीखनी शुरू कर दी। उसके अन्य सब्जैक्ट थे-कुरान, गणित और ड्राईंग। पिछले बरस जब उसने तीसरे दर्जे की पढ़ाई छोड़ी थी तब वह एक से सौ तक गिनती कर लेती थी। अब वह हजार तक लिखना सीख रही थी। अब टीचर बनने की मंजिल की ओर वह अग्रसर थी।

जलालाबाद में खालिदा की नई जमात में टीचर ने दिन की शुरूआत कौमी तराने और कुरान की आयात से की। कुरान की पहली आयात की तरफ इशारा करते हुए टीचर ने कक्षा की लड़कियों से पूछा कि सूरत-अल- हामेद कौन सुनाएगा? उसने देखा कि केवल खालिदा ने हाथ उठाया हुआ था।

खालिदा खड़ी हुई। उसने बोलना शुरू किया 'हे खुदा, हमें सीधा रास्ता दिखाओ, वह रास्ता जो तुमने अपने खास बंदों के लिए रखा हुआ है, वे बन्दे जिन पर तुम्हारी खास कृपा है...।'

टीचर ने खुशी से चहकते हुए कहा कि खालिदा के लिए जोरदार तालियां बजाओ। जैसे ही खालिदा बैठने लगी सारी क्लास ने उसके लिए तालियां बजाई। अपनी पिछली सारी तकलीफें भुलाकर खालिदा एक बार फिर छोटी बच्ची बन गई थी।

कविता

अनभिज्ञ तुम

सुनो!
तुम्हारे कुछ साथी
काट गिराए गए
कुछ को काटने की
तैयारियां जारी हैं

क्षेत्र, जाति, मजहब की
खुशफहम बेढ़ियां
किसी न किसी बहाने
पहनाई जा रही हैं।

इन दिनों तुम्हें भी तो
खिलाई जा रही है
हरी पत्तियां (जहरीली)
अपने गले में पड़ी रस्सी से
अनभिज्ञ तुम
चपढ़-चपढ़ बुड़क रहे हो
सुड़क रहे हो हरी पत्तियां

सच कहूं तो तुम में
और उस भेड़ में
कोई अंतर नहीं
जो सतर्क नहीं है,
उस दिन के लिए
जब खड़े होना है
उसे, सिर झुकाकर
कसाइयों के आगे
खुश करना है
मानवी दैत्यों को
भगवान के नाम
मंदिर के प्रांगण में
'पांची' देकर

तुम ही कहो
तुम्हें स्नेह भरा
खत लिखूं
या
धिक्कार भरी प्रताड़ना।

वीना शर्मा

क्या आप जानते हैं?

रेड कॉर्नर नोटिस क्या है

यह इंटरपोल द्वारा जारी किये जाने वाले नोटिस में से एक है। नोटिस का रंग उसमें दी जाने वाली जानकारी का सूचक होता है। रेड कॉर्नर नोटिस किसी देश के अनुरोध पर उस समय जारी किया जाता है। जब कोई अपराधी गिरफ्तारी से बचते हुए देश छोड़कर दूसरे देश में भागने में सफल हो जाता है। इंटरपोल के इस नोटिस की भूमिका उन दोनों देशों की पुलिस के बीच सामंजस्य स्थापित करवाने और उस अपराधी की गिरफ्तारी तक सीमित रहती है। रेड कॉर्नर नोटिस दो तरह का होता है। पहला गिरफ्तारी के आधार पर जारी किया जाता है और किसी व्यक्ति के विरुद्ध जारी किया जाता है। दूसरी तरह का नोटिस कोर्ट के फैसले को आधार बनाकर जारी किया जाता है, जिसे अदालत सजा सुना चुकी है।

1. राष्ट्र मण्डल देशों की प्रमुख कौन है?
2. गुट निरपेक्ष आंदोलन का पहला सम्मेलन कहां हुआ था?
3. मध्यकालीन चतुर्भुज मंदिर कहां है?
4. गरीबी उन्मूलन का नारा किस पंचवर्षीय योजना में दिया गया था?
5. भारत को श्रीलंका से कौन सा जल मार्ग अलग करता है?
6. राष्ट्रीय पोषण संस्थान कहां है?
7. द्रोणाचार्य पुरस्कार किस क्षेत्र में दिये जाते हैं?
8. भारत का सबसे पुराना तेल शोधक संयंत्र कौन सा है?
9. संघ और राज्यों के बीच वित्तीय आबंटन की सिफारिश कौन करता है?
10. सानिया मिर्जा व महेश भूपति ने कौन सा मिश्रित युगल ग्रैंड स्लैम जीता?
11. 'दि ऑडेसिटी ऑफ होप' किसकी पुस्तक है?
12. भूकम्प की तीव्रता किस पैमाने पर नापी जाती है?
13. राष्ट्रीय जल संसाधन परिषद का अध्यक्ष कौन है?
14. किस धातु की विषाक्तता से लीवर सिरोसिस होता है?
15. लहसुन की विशिष्ट गंध की वजह क्या है?
16. हिमाचल का मिनी स्वीटजरलैण्ड किसे कहा जाता है?
17. हिमाचल का पहली हवाई पट्टी कौन सी है?

प्रस्तुति-जया चौहान

□□□

उत्तर-1. एलिजाबेथ द्वितीय, 2. बेलग्रेड (जर्मनी) में, 3. खजुराहो, 4. पांचवीं, 5. पाक जलडमरू मध्य, 6. हैदराबाद में, 7. खेल प्रशिक्षण के, 8. डिगबोई, 9. योजना आयोग, 10. आस्ट्रेलिया ओपन, 11. अमेरिकन राष्ट्रपति बराक ओबामा की, 12. रिक्टर, 13. प्रधानमंत्री, 14. कॉपर, 15. सल्फर युक्त योगिक, 16. खजियार को, 17. भून्तर, जिला कुल्लू।

स्वास्थ्य

अल्जाइमर्सः बढ़ती उम्र घटता सुरक्षा चक्र

अल्जाइमर्स आवश्य रूप से उम्र बढ़ने की प्रक्रिया की स्वास्थ्य समस्या नहीं है यद्यपि जोखिम तत्वों में आयु घटक प्रमुख है। अन्य घटक हैं पारिवारिक इतिहास व जीन सम्बन्धी। इस दिशा में अनेक शोध चल रहे हैं।

क्या आप साठ से ऊपर हैं और आपको भूल जाने की आदत है और इसी आदत के कारण आप परेशान रहते हैं? क्या आप गुस्सैल और अपूर्वानुमेय हो गये हैं? क्या आप बोलने में भाषा सम्बन्धी व्यवधान महसूस करते हैं? क्या आप स्वयं के निर्णय के प्रति आश्वस्त नहीं हैं? क्या आप अक्सर नींद में व्यवधान महसूस करते हैं? क्या आपने अपने व्यवहारिक प्रतिमान में कोई विशेष परिवर्तन महसूस किया है? यदि हां, तो इसकी संभावना है कि आप अल्जाइमर्स के शिकंजे में आ रहे हैं। अल्जाइमर्स एक क्रमिक अपह्रसित रोग है जो मस्तिष्क कोशिकाओं पर आक्रमण कर यादाश्त, सोच और व्यवहार को प्रभावित करता है। यह मनोभ्रंश की प्राथमिक स्थिति है। अमरीकी अल्जाइमर्स संगठन के अनुसार 65 वर्ष के ऊपर आयु वर्ग में 10 में से एक तथा 85 वर्ष से अधिक आयु के व्यक्तियों में 50 प्रतिशत को प्रभावित करता है। दुनिया में 2 करोड़ लोग अल्जाइमर्स से पीड़ित हैं। भारत में 60 से अधिक आयु के 6 करोड़ लोग हैं जिनमें 6 प्रतिशत मनोभ्रंश के शिकार हैं तथा इनका 20 प्रतिशत अंश अल्जाइमर्स रोगियों का है। अल्जाइमर्स महिलाओं के लिए खासतौर पर गंभीर समस्या है क्योंकि कुल वृद्ध लोगों की कुल आबादी में वृद्धाओं की संख्या अधिक है। रजोनिवृत्ति के बाद शरीर में एस्ट्रोजन हारमोन के स्तर में कमी अल्जाइमर्स रोग का एक संभावित कारण माना जाता है।

एक अनुमान के अनुसार भारत में प्रतिवर्ष एक लाख से अधिक व्यक्ति अल्जाइमर्स के कारण मर जाते हैं। हृदय रोग, कैंसर तथा हृदयघात के बाद वह चौथा रोग है जो प्रौढ़ जनसंख्या के लिए जानलेवा सिद्ध हो रहा है। भारत में इस राग के बारे में जागरूकता आरम्भिक स्थिति में है। पुराने जमाने में सठिया जाना या सत्तर-बहत्तर आदि अभियान संभवतः अल्जाइमर्स रोग के लिए प्रयोग किये जाते थे। पुराने लोग संभवतः इस रोग के संलक्षणों से परिचित थे लेकिन तब संयुक्त परिवारों में रहते इसकी विकरालता का अनुमान नहीं था। लेकिन धीरे-धीरे सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक बदलाव में इस समस्या को अधिक उजागर किया है। अमेरिकन एकडेमी ऑफ न्यूरोलोजी ने अल्जाइमर्स रोग की आरम्भिक चेतावनी संकेतों का खुलासा किया है जो इस प्रकार है- स्मृतिह्रास जो कार्य पटुता व बोलने की समस्या को प्रभावित करता है, सामान्य कार्यों के निष्पादन में कठिनाई, किसी वस्तु को रखकर भूल जाना, कहीं खो जाना या समय व स्थान के बारे में भ्रमित हो जाना, कमजोर निर्णय, चिंतन से सम्बन्धित समस्याएं, पहलपन का अभाव, मूड व व्यवहार में परिवर्तन आदि। एक वक्त था जब अल्जाइमर्स रोग की पहचान रोगी की मृत्यु के बाद अटोप्सी द्वारा संभव थी लेकिन अब 95 प्रतिशत अल्जाइमर्स के संभावित रोगियों का निदान संभव है। अल्जाइमर्स अब असाध्य रोग नहीं है तथापि इस रोग के उपचार के लिए उपयुक्त निदान विशेष रूप से रोग को प्रभावित करने वाले घटक यथा, संज्ञानात्मक कार्य एवं जीवन स्तर तथा व्यवहारात्मक कृत्यों का सम्बन्ध है, महत्वपूर्ण है।

अल्जाइमर्स आवश्य रूप से उम्र बढ़ने की प्रक्रिया की स्वास्थ्य समस्या नहीं है यद्यपि जोखिम तत्वों में आयु घटक प्रमुख है। अन्य घटक हैं पारिवारिक इतिहास व जीन सम्बन्धी। इस दिशा में अनेक शोध चल रहे हैं। फिनलैण्ड के एक अध्ययन के अनुसार उच्च रक्तचाप या रक्त में उच्च कोलेस्ट्रॉल स्तर अन्ततः बढ़ी हुई उम्र में इस रोग के उत्तरदायी बन जाते हैं। वहां के एक आयुर्विज्ञान अध्ययन के अनुसार उच्च रक्तचाप से पीड़ित 1500 व्यक्तियों के सत्तर व अस्सी दशक में अध्ययन के उपरांत उन्हीं व्यक्तियों का (जब उनकी उम्र 65 से 80 के बीच थी) 1998 में पुनः परीक्षण करने पर पता चला कि उनमें से लगभग 50 प्रतिशत अल्जाइमर्स से पीड़ित थे। ऐसे व्यक्ति जिनका सिस्टोलिक रक्तचाप स्तर 160 एमएम या उससे अधिक था या जिनका कालस्ट्रॉल स्तर प्रति लीटर 605 मिली- मोल्स था, उनके अल्जाइमर्स से पीड़ित होने की दुगुनी संभावना थी, अपेक्षाकृत उन व्यक्तियों के जिनका सामान्य रक्तचाप और सामान्य कालस्ट्रॉल स्तर था। सामाजिक- सांस्कृतिक मूल्य प्रधान पुराने पारिवारिक ढांचे में वृद्धजन को मिलने वाला सहारा, सम्मान समय के परिवर्तन जनसंख्या प्रसार, शहरीकरण व संयुक्त परिवार प्रणाली के विघटन के साथ-साथ धीरे-धीरे क्षयग्रस्त होता जा रहा है जिससे अल्जाइमर्स से पीड़ितों का कल्याण कार्यक्रम सर्वाधिक प्रभावित हुआ है। सबसे दुखद बात यह है कि अल्जाइमर्स रोगी ही समाज की मुख्य धारा से पूरी तरह अलग-थलग हो जाते हैं। उनके अपने उन्हें उपेक्षित समय नहीं देते, यद्यपि इस समय निजी सम्बन्धियों की उन्हें सर्वाधिक आवश्यकता होती है। मुश्किलें और तब बढ़ जाती जब अल्जाइमर्स रोगी अविवाहित होते हैं और उनकी देखभाल करने के लिए कोई नहीं होता या जब उनकी आय के स्रोत सूख जाते हैं।

पूरी दुनिया में अल्जाइमर्स की प्रभावी चिकित्सा सम्बन्धी शोध किये जा रहे हैं। जापान की कियो यूनिवर्सिटी के न्यूरोलोजी के प्रोफेसर इकुयो निशिमोटो और उनके शोध दल ने ऐसे तत्व का पता किया है जो मस्तिष्क की स्नायु कोशिकाओं के क्षय को रोक सकता है ताकि अल्जाइमर्स से बचा जा सके। शोधकर्ताओं ने यह स्पष्ट किया है कि 45 वर्ष के ऊपर ही मस्तिष्क के कार्य की गति मंद पड़ जाती है, जो धीरे-धीरे क्षीण होती चली जाती है। अल्जाइमर्स सहित वृद्धावस्था के रोगों से बचने के लिए वे निम्न सुझाव देते हैं:-

1. **पोषण युक्त आहार**-वीटा कैरोटिन (विटामिन-ए), विटामिन-सी तथा विटामिन-ई युक्त आहार जो गाजर, हरी पत्तेवाली सब्जियां, मौसमी, संतरे तथा नींबू या अंकुरित गेहूं का प्रयोग किया जाना चाहिये। इनके नियमित प्रयोग से यादाश्त पर उम्र का दुष्प्रभाव नहीं होता तथा शारीरिक व मानसिक शक्ति भी बनी रहती है।

2. **सक्रिय बने रहने के लिए शारीरिक व मानसिक व्यायाम आवश्यक**-नियमित योगिक क्रियाएं शरीर व मन के क्रमिक ह्रास पर अंकुश लगाती है। प्रायः खुली हवा में घूमना तथा भस्त्रिका प्राणायाम बहुत उपयोगी माना गया है।

3. 'आर्काइव्ज ऑफ न्यूरोलोजी' में प्रकाशित एक सात वर्षीय अध्ययन के अनुसार निरामिष आहारियों के लिए एक सप्ताह में एक बार मछली के सेवन को लाभकारी माना गया है। एक अन्य अध्ययन में यह भी बताया गया है कि कुछ दर्दनाशकों का नियमित प्रयोग अल्जाइमर्स की संभावनाओं को दूर रखता है।

4. केंटुकी यूनिवर्सिटी के न्यूरोलोजी विभाग के प्रोफेसर डेविड स्नोडन के वृद्धावस्था व अल्जाइमर्स सम्बन्धी 15 वर्षीय शोध मे बताया गया है कि नकारात्मक सोच जैसे चिंता, घृणा, क्रोध और अहंकार का शरीर व मन पर समुचित दीर्घकालीन प्रभाव बढ़ी हुई उम्र में अल्जाइमर्स जैसा संकट पैदा कर सकता है। भारत के धार्मिक ग्रंथों में भी इस प्रकार के नकारात्मक विचारों को त्याज्य कहा गया है क्योंकि यह मन व शरीर के क्षय के लिए उत्तरदायी हैं।

वृद्धजन की सुरक्षा और कल्याण के लिए पश्चिमी देशों में सामुदायिक देखभल व सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही है। संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस व स्वीडन में इनके लिए सामूहिक घरों/लघु आवासीय इकाइयों की व्यवस्था की गई है जिनमें चिकित्सा व देखभाल भी सम्मिलित है। यह एक प्रकार का पारम्परिक अस्पताल का वैकल्पिक स्वरूप है जिनमें अनौपचारिक स्नेहपूर्ण वातावरण होता है। इसमें रोगियों की गरिमा व सत्कार का पूरा ध्यान रखा जाता है। भारत में वृद्धों के लिए संयुक्त परिवार प्रणाली ही सामाजिक सुरक्षा का एक मात्र ऐसा स्वरूप है, जो ग्रामीण क्षेत्रों में कुछ अपवादों को छोड़कर, खंडित हो चुका है और जिसकी पुनर्स्थापना संभव नहीं है। देश के वृद्धजन के लिए सामाजिक सुरक्षा प्रणाली का अभाव 1993-94 के एक सर्वेक्षण से प्राप्त इन तथ्यों से पुष्ट होता है कि गांव में 70 प्रतिशत तथा शहरों में 44 प्रतिशत वृद्ध आज भी कार्य करते हैं, जबकि वास्तव में उन्हें विश्राम की आवश्यकता है। भारत सरकार परिवार को ही वृद्ध व्यक्तियों की देखभाल के लिए उत्तरदायी मानती रही है जिसके फलस्वरूप केवल अपवाद के रूप में ही उनकी सुरक्षा व कल्याण के लिए यत्न किये गये हैं। लेकिन अब इनकी प्राथमिक स्तर पर आवश्यकता महसूस की जाने लगी है। वृद्धों की देखभाल, सम्मान व सहायता की दिशा में गैर सरकारी सामाजिक संगठनों की भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है। स्वयं परिजनों की भूमिका को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। यह समझना चाहिए कि वृद्ध हर व्यक्ति होता है और उसकी सेवा सुश्रुषा मात्र सामाजिक कर्तव्य नहीं अपितु परिवार का सामाजिक दायित्व भी है।

साधना गर्ग

कविता

गांव का सपना

गांव मुस्कराकर कहता है,
'लगता है मेरे संवरने के दिन आने वाले हैं'
मेरे ही वासी मिलजुल,
मुझे सजाने की योजना बनाने वाले हैं।
मुझे सजाने में महिला, अपंग,
बुजुर्ग कोई पीछे न रहने वाले हैं,
'लगता है मेरे संवरने के दिन आने वाले हैं।
ग्रामवासी मुझे संवारेंगे,
और सौ दिन की मजदूरी पायेंगे,
जब घर में ही मिले मजदूरी,
तो वे बाहर क्यों जायेंगे।
महिलायें भी होंगी आत्मनिर्भर,
उन्हें भी सौ दिन की मजदूरी पानी है,
वह निर्बल है, वह असहाय,
ये बात उन्हें झुठलानी है।
संवरेंगे कुएं, पोखर-तालाब सभी,
मृदुजल से बावडियां प्यासे की प्यास बुझाएगी,
नभ भी शरमा जायेगा,
जब नई-नवेली पोखर में अपना प्रतिबिम्ब देख इठलाएगी।
वृक्षों का होगा रोपन,
वन पर्यावरण संरक्षण कर रिमझिम सावन बरसाएगा,
धरती को बांध अपने आगोश में,
भूस्खलन से इसे बचाएगा।
गलियां-कूचे, रास्ते सब होंगे पक्के,
जो वर्ष भर काम आयेंगे,
दूषित जल निकासी की भी होगी व्यवस्था,
तभी तो रोगों से मेरे वासी बच पाएंगे।
भूमि का होगा सुधार,
क्षमता उत्पादन की बढ़ जायेगी,
घर-घर में जलेगा चूल्हा,
सुखद नींद सभी को आयेगी।
मेरे जन के प्रतिनिधियो,
तुम्हें अहम भूमिका निभानी है,
हर व्यस्क वासी के भीतर,
इच्छा शक्ति विकास की जगानी है।
मेरे विकास की योजना के लिए,
'राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम अपनाना होगा,
किन्तु सुन लो एक बात मेरी,
नियम लांघ तुम कुछ मत करना वरना पछताना होगा।
यदि सच्ची लग्न,
निष्ठा व निश्चय होगा दृढ़ तेरा,
हर निर्माण स्वस्थ हो,
दीर्घ आयु पाए, यह आशीर्वाद है मेरा।
तुम्हारी लग्न, मेहनत से संवर,
खूबसूरत मेरा आकार होगा,
घर-घर में होगा राम-राज्य,
सपना बापू का साकार होगा।

सन्तोष शर्मा

बोधकथा

अच्छी राह के राही

एक गांव में एक चोर रहता था। उसके चार बेटे थे। वह अपने बेटों को शिक्षा देता रहता था कि जहां भगवान की चर्चा होती हो, वहां तुम लोग मत जाना। पिता की बातों का अनुपालन उसके चारों लड़के करते रहते थे।

एक दिन चोर का बड़ा बेटा चोरी करने जा रहा था। रास्ते में उसने देखा कि एक जगह सत्संग हो रहा है। उसे पिता के वचन याद थे, परन्तु अपने दोनों कानों में रूई डाल ली जिससे सत्संग की कोई बात कानों में न पड़े। चलते-चलते उसके एक कान से रूई गिर गयी, परन्तु वह उससे बेखबर रहा। अतः पूजा स्थल के पास से गुजरा तो उसे आवाज सुनाई पड़ी कि देवता लोगों की परछाई नहीं बनती और उनके पैर धरती पर नहीं पड़ते। चोर का बड़ा बेटा यह बात सुनते- सुनते आगे निकल गया। रात में वह नगर सेठ के यहां से काफी धन चोरी कर लौट आया।

दूसरे दिन नगर सेठ ने अपने मुनीम को चोरी का समाचार बताया तो उसने कहा कि यह भानपुर के चोर के लोगों का ही काम है लेकिन वह इस तरह चोरी का सामान वापस नहीं करेगा, कोई दूसरा ही रास्ता ढूंढना होगा। मुनीम इसी विचार से एक बहुरूपिये के पास गया और उसे काली का रूप धारण कराकर चोर के घर भेजा।

बहुरूपिया काली का रूप धारण कर जब चोर के यहां अचानक पहुंचा तो चोर के परिवार के सभी सदस्य उसे देखकर डर गये। इसका लाभ लेकर बहुरूपिया बोला, तुम लोग रात में नगर सेठ के यहां से बहुत धन चोरी करके लाये हो, उसमें से कुछ धन मुझे भी भेंट चढ़ाओ नहीं तो मैं अभी तुम सभी को समाप्त कर दूंगी।

यह सुनते ही भय से सारा परिवार कांपने लगा और आपस में मंत्रणा करने लगा कि क्या किया जाये। तभी बड़े लड़के को याद आया कि सत्संग में चर्चा हो रही थी कि देवता लोगों की परछाई नहीं बनती और न ही उनके पैर धरती पर पड़ते हैं लेकिन इसकी तो परछाई भी धरती पर पड़ रही है और पैर भी जमीन पर हैं। फिर भी काली माई कैसे हुई। उसे समझते देर न लगी कि यह कोई बहुरूपिया है जो हम लोगों को डराकर ठगना चाहता है। वह घर के अंदर से लाठी लेकर उसको मारने दौड़ा। बहुरूपिये ने सोचा कि उसका भेद खुल गया है। इसलिए वह वहां से भाग गया।

काली माई बना बहुरूपिया जब भाग गया तो चोर के बड़े बेटे ने अपने पिता से कहा, पिता जी, भगवान की थोड़ी सी चर्चा सुनने से जब चोरी का हमारा धन बच गया तो भगवान के ध्यान में जो सदैव रहता है, उसका कितना बड़ा कल्याण होता होगा।

बेटे की बात पिता की समझ में आ गई और उसी दिन से वह भगवान के पूजा पाठ में लीन हो गया और अपने बेटों को भी चोरी करने से मना कर दिया। परिणाम हुआ कि सभी अच्छी राह के राही बन सके।

राजेन्द्र परदेसी

पहाड़ी भाषा कनै साहित्य लोक मंच

fxfjjkt lkIrkfgd f'keyk] 30 flrEcj&6 vDrcj] 2009

खुश रैह्णा तुहाड़े हत्थ

● कुसुम शर्मा

अज जमाणे च माहणू तनां च जी करदा है। जींदे रैह्णा जियां उसदी मजबूरी होये। बचारगी, नमोसी, किल्लापण उसदी किस्मत बणी कैं रही गई है। जीउंदे रैह्णा जियां उसदी मजबूरी होये, माह्णूये दी। जिंदड़ी मंगेया गैह्णा लगदी है। हर बेला डर रैंह्दा, कुथी गुआची न जाये। म्हारे मकाने साह्मणे इक रुखे पर कोई सौ-सवा सौ चिड़ी रैंह्दी। भ्यागा उठदे सार तिणां दी चीं-चीं मने जो मोही लैंदी है। भई इणां जो उठी करी रोटी टुकड़ा बी पाणां। चीं-चीं करदियां अंदर बड़ी औंदिया न। इणां दी चैह्चहाट मने जो चंगा करी दिंदी है। पाणी पीने आस्ते इणां जो इक अलग भांडा बी रखी दित्ता है। जेकर कां इणां दी रोटी खाई जाण, शकैत लाण अंदर बड़ी जांदियां न। परमात्मा दी किन्नी छैल देन न ऐह पंखेरू-पैंछी। म्हारे दुख भुलाई दिंदे न। कुदरता दे नजारे दिखी कैं दुख सुभावक भुली जांदा है।

मैं अपणे कम्मे च रूझी रैहणी आं। बगते दा जरा बी पता नीं लगदा। अपणी दुनिया च मस्त। जणासां कणें चुगली-मैंह्जर मिंजो जरा पसंद नीं। बुनाई-कढ़ाइ, कसीदे च मैं अपणा दिलड़ू लगाई रखेया है। कुसी दी मदद करणे च मिंजो खुशी मिलदी है। कताबां पढ़णां बी इक खरी आदत है। कताबां कन्नें दोस्ती बी मने जो चंगा, तंदरुस्त रखदी है। गीत-संगीत खुश रैहणे दा इक छैल माधम है। संगीत कुसी बी प्रदेशे दा होए, मने जो झंझोड़ी जांदा है। दुख, कल्लापन, बोरियत खत्म होई रैंह्दी है। मन हौला, हलका होई रैहंदा है। कुसी मजबूरे दी मदद करी कैं दिखा, कुसी दुखिये दिया दुखदिया रगा पर हत्थ रखी करी दिखा, दिखो तुहां जो किन्नी खुसी मिलदी हैं खुशी बरखा दी पैहलियचा फुहारा साईं मने जो हिलोर दई जांदी हैं गरमिया च ठंडी हौआ साईं लगदी है। खुशिया दा कोई रूप नीं हुंदा। जियां बी मिल्लें दूईं बाहीं पसारी कैं लई लौः। खुशी बैसे वी दस्सी करी नी औंदी। बूहे पर दस्तक दई कैं नीं औंदी। वैसे खुशी मने दे अंदर बसी है। पर असैं माह्णू इस जो बाहर खोजने दी कोशत करदे हां। फिकर, चिंता कुसी समस्या दा हल नीं। अपणे आपे जो जलाणे दी कोशत है। जो होणा सैः तां

होई करी रैह्णा पिरी ज्यादा सोची कैं क्या बणाई लैणां। बेहतर इसी च है कि कदेहा बी बेला होऐ हर बेला खुश रैहणे दी कोशत करिए। अजकल जितां दिखी लओ, कोई माहणू खुश नी सुझा दा। रोनियां सूरतां हर पासेकं। रिश्तेयां च तनां दिखी लओ। रिश्तेयां च गर्माहट ल्योणां बी तां असां दां फरज है। माड़ा जिहा प्रेम चाईदा। होर क्या? केह्ड़ा मते खजाने दी लोड़ है। असें कई बारी थोड़ी जही कोताही करी जाणे हां। मर्यादा च रही कैं प्यारे दी पवित्रता जो बणाणे दी कोशत तां करणे च कया हरज है। दिले ते रिश्तेयां च जान फूकणे दी लोड़ हैं इक कदम तुसें बधाओ, दूआ बी तां किच्छ कोशत करग। ऐसा मेरा बसुआस है। माह्णूये दी जिंदड़ी बड़ी कीमती है। जींण ज्यूदेयां दे मेले हुंदे। इस गल्ला दा ख्याल रखिएं ज़िंदड़ी हास्सेयां दा दूआ नां है। रोई करी कैं बी कटोई जाणी। पर जे असें हासी करी इस जो कामजाब करणे दी माड़ी जही कोशत करिए तां असां दा क्या घटी जाणां? जिंदादिली ने ज़िंदड़ी कट्टिए। इयां बगते जो धक्के मारी करी कै नां कटिए।

बागवानी बी इक खरा शुगल है। अच्छा शौक है। बिजी रखणे दा छैल ढंग है। कुदरता कन्ने सरबंध जोड़णे दा खरा माधम है, छोटे, माड़े कम्मे च खुशी लभणे दी कोशत होणा चाईदी। कम्म तां कम्म है। छोटे होए जा बड्डा। इक बारी समाजक बणी करी दिखिये। इस आसते खरी सोचे मती जरूरी है। छोटी सोचा जो पासे छड्डी दइए। दूइयां दी गलतियां लभणां मतां आसान है। माहणू अपणां दुशमन खुद है। कुसी गरीब-गुरबे दी मदद करी कैं दिखा। तुहां जो बड्डी खुशी लभणी। जे दो पेसे तुसां ब्हाल हण, तां कुसी पात्र बंदे दी मदद अवश करो। दान देनां बी जरूरी है। इसते बी तुहां जो खुशी मिलगी। कुसी हस्पताले च चली जाओ। जरूरतमंदे दी मदद करी दियो। कुसी गरीब रोगी जो दुआइयां लई दियो।

पुण बी तां फलियां बी मिलगियां तुसां जो। दूयेयां जो खुशी दई करी तुहां जो बी खुशी मिलगी। इसदी सोलहा आन्ने ग्रांटी है। कुसी रोंदे न्याणे जो हसाई करी दिखी ल्यो, खुशी अपूं तुसां देयां लिबड़ां पर आई रैह्ग। गरीब-गुरबा अज्जे च जींदा है। असें लोक भविखे दी चिंता च लिस्से हुंदे रैंह्दे हां। असें चिंता-फिक्र च सुकदे रैंह्दे हां। असां ते तां बच्चे, न्याणे खरे, जो दिने च साडे तिन्न सौ बार हसदे न। कन्ने असें बड्डे माहणू बची कैं, कंजूसियां कन्ने हसदे हां। कुथी ऐह् खजाना मुकी न जाए। कल्पना जो डुआरियां भरना दिआ। गासे उडणा दिआ। माड़े जहे सोचा कि असें आस्ट्रेलिया च बैठयो हां। सोचने च क्या जांदा है? ख्याली पुला पकाई करी दिखा। खुशी हासल करणी तां फिरी तुसां दा रोम-रोम खुली रैह्णा। खुशी तां औणें ते नीं रही सकदी। मेरा पक्का दावा है।

कबता

गांधी-अवतार

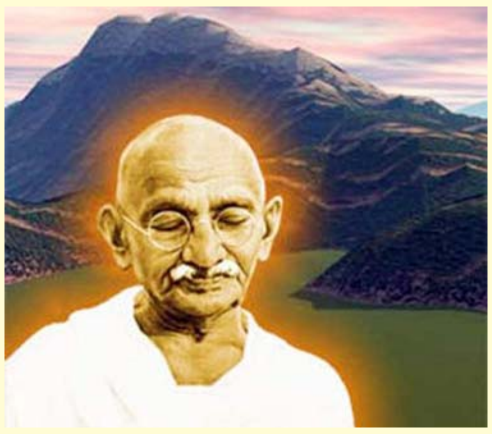

जुगा-जुगा ते पैदा हुंदा गांधी जेड़ा माण्हू
जो मुल्खो खे आपणा सब कुछ लुट्वाई देंदा

फूला रा बछौणा छाड्डी कांडेया पांदे सई लैंदा
भूखेया-गरीबा साथे हासी ओर रोई लैंदा।

करदा जो छोट्टे-बड्डे सबनी ते प्यार
मानदा नी कदी बी जो आपणी हार!
जुगा-जुगा ते पैदा हुंदा गांधी जेड़ा माण्हू...

फरंगिया रे जुल्मा जो हासदे ई सई लैंदा
जेला री जिन्दड़िया हासदे ई बिताई लैंदा।

'सी- भी नी करदा चाहे वैरी करो वार
मानदा नी कदी बी जो आपणी हार!
जुगा-जुगा ते पैदा हुंदा गांधी जेड़ा माण्हू...

देश्शो री आजादिया तैं लाठी-गोली खाई लैंदा
आंधी-तूफाना दे बी दिऊबा जलाई लैंदा

अहिंसा ही पुकारदा चाहे बैरी लओ हथ्यार
मानदा नी कदी बी जो अपणी हार!

'सच्चो री जीत हो' एडा ई गलाई जांदा
जातिया रे भेद छाड्डी सबनी मलाई जांदा

मंदर ओरे मस्जिद समझो सबी रे घर बार
लगदा नी माण्हू से लग्गो अवतार!
जुगा-जुगा ते पैदा हुंदा गांधी जेड़ा माण्हू
जो मुल्खो खे आपणा सब कुछ लुट्बाई देंदा।

● अमर देव आंगिरस

ध्योतरू -पोतरू

मणसां खांदे पींदे घरे दी नुआं-धीयां वाली थी। इक तां बचारिया दा 12/13 सालां दे होणे पर ही ब्याह होई ग्या था। सह भी तिस टैमे दे 25 सालां दे दुहाजुये कने...। हां, दुहाजू करमू सेहता दा भी कने दिमागे दा भी दमदार था। तिन्नि बजारे च बापुये सौगी खोखे च ही ढेर सारा पैसा कमाया। पहलें तिन्नि इक दुकान खरीदी फिरि तिसा दुकाना दिया कमाइया कने ही त्रीं भाऊआं जो अलग अलग दुकाना खीदी लइयां। करमू बड़का भाऊ था। सह बड़के भाऊये दी जिम्मेवारी भी समझदा था। त्रीं भाऊआं दा परिवार भी लमा चोड़ा होई ग्या था। खेर, करमुयें भाऊआं दिया मददा कने मकान भी पक्का, बरांडे वाला पाई लिया। ग्लाणे दा मतलब एही कि मण्सां दा परिवार कस्बे च खांदा जिंदा मन्या परिवार था। मण्सां भी अपणे मुहल्ले च सारेयां कने मिली बरती चलदी थी। पंजाह सालां दी हुंदी हुंदी सह ध्योतरूआं-पोतरूआं वाली होई गइयो थी।

सयाणे बोलदे थे कि खरा-बुरा समै माणुआ सौगी ही रहंदा कने समै समै पर अपनी हाजरी लगांदा रहंदा। मणसां पंजां-छः सालां दी थी तां कोठलुआं-कदाला लगी पई थी चुकणा रखणा। फिरि सह बडी होई तां तिसा दी तरक्की भी होई गइयो थी। उमरा दे साहबे ने तिसा जो तरक्किया पर भिकड़ां भनणे कने अन्ना-कच्छां खुणने दा कम मिलि ग्या। बापुये दें घरें तिसां घां भागां च भिकड़ कने अन-कछ ही रह न खाणे जो रजी करी न लाणे जो चाए दे कपड़े लते। बापू बचारा भी कुदु कुदे पेटे पालदा कने कुयो खरे कपड़े करदा। महीने च कदी दस दिन दिहाड़ी लगणी कदी सह भी नी। खेतिया च बी बाई करि बी भ्भी हथें नी ओणा। बापुयें दे घरें भी सह छः भाऊआं-बहणी ते बडी ही थी कने एथू सौरियां ने भी मणसां बड़की ही थी पर हुण फर्क एही था कि एथू तिसा दी जेब तां पैसयां ने भरियो रहंदी पर त्रीं त्रीं नुआं दे न्याणे तिसा जो कुथी जाणा ही नीं दिंदे थे। उपरा ते त्रीं त्रीं धीयां दे न्याणे। तीज-त्योहारां तां मणसां दियां कन्ना च दादी...नानी ही घुमदा रहंदा। खाणा पीणा, टट्टी पेशाब भी ध्योतरूआं-पोतरूआं जो नानी दादी ही करांगी। इंयां तां मणसा पोतरूआं दा ख्याल रखदी पर ध्योतरूआं जो तां सह फुल्लां पर रखदी थी। मजाल है तिन्हा जो छिक भी किंजा आई जाए। ध्योतरूआं ताईं तिसा दी भाखा भी बदलोइ जांदी, 'मेरा टिकला...मेरी चन्दरौली...कने पोतरूआं जो 'ओए छोरूआ...मतरैड़ कुथी दी... नकसीमड़ा दिया...।' खाणा-नुहाणा...भी पहलें ध्योतरूआं जो... नलोएं कपड़े भी ध्योतरूआं कने पोतरूआं जो अपणियां अपणियां माऊं वला भेजी दिंदी। 'सैह कैत लगियां तुसां दियां मांऊं...अपणया मतरेंड़ा जो नुहाई धुआई भी नी सकदियां।' बड़े पुतरें भी इक दिन माऊ जो सुणाई ही दिता।

'अम्मा तेरे कम्मे इन्हां पोतरूआं ही ओणा है... एह तू सोची ल्यां।'

'ओ अड़या सह टैम कुनि दिख्या...है न भई टिकलुआ...।' माऊ भी पुत्रे दे ताहने जो सुणी अणसुणा करी दिता।

मणसां दी आदत थी कि तिन्ने दिने च इक बरि गुरूद्वारे मथे टेकणा जरूर जाणा। अज सह जाणा लगि तां कन्ने ध्योतरू-पोतरू भी जाणे ताई लपटोई गै।

'दादी मैं भी जाणा...नानी मैं भी जाणा...।' मणसां पहलें तां कड़ीं-मणी किति. ..पर बच्चे तां बच्चे ही थे। हारी करि तिन्ने ध्योतरूये जो तां मूंडे चुक्या कने पोतरूये दा हथ पकड़ी लिया। कदि कदि बड्डेंया दा हिरख-बरोध छोटयां न्याणियां च भी दिखणे जो मिलदा। फर्क सिर्फ एही हुंदा कि न्याण्यां दा हिरख-बरोध कुसी दा नुकसान नी करदा। गुरुद्वारे वालिया गलिया च पुजी पोतरूये झट चलिया चलिया दादिया दा हथ मरोड़ी दिता।

'दादी, हुण इस टिकलुये जो पैदल चला कने मिंजो मूडें...।'

'मिया इस जो रण्हा दे मूडें...तू चल्या तैह भला चंगा...थोड़ी दूर ही तां जाणा हुण...।' 'मैं नीं...मैं नी...हुण मिंजो चुका...' कने तिसा दा पेतरू हट बन्नी भुंजां बैठी ग्या। द' उठ चल गांह...मैं दो दो कियां चुकणे...। ध्योतरू तां होर भी नानिया कने चिपकी ग्या। मणसां फिरि भी ध्योतरूये जो छातिया कने चिपकाई छड्डया कने पोतरूये जो लगि डांटणा...पोतरू भी लग्गा रोणा...लग्गा माऊ जो हक्कां पाणा..। लग्गा जमीना च बिल्टां मारना...। ओथू गलिया दा कुता बच्चे दे रोणे क्लाणे सुणी करि लग्गा मणसां जो भौंकणा। शायद कुत्ते जो भी मणसां दिया ममता दे भेदभाव दा अंदेशा होई ग्या था। मणसां कदि कुत्ते जो दुर...दुर... करें, कदि पोतरूये जो सिधे करें...चुप करायें। 'नानी उठ...चल...।' ध्योतरू मूड़े ते ही लग्गा मणसां जो पचरोड़ना.. मुक्यां मारना...।

'आह... मिया तू तां हुण चुप कर...।' मणसां फिरि कुत्ते जो दुर...दुर... करदियें ध्योतरू दे सिरे पर हथ फेरया। ध्योतरूये दे मने च पता नी क्या सोच आई, तिन्नि कुत्ते बखि दिखि झट ग्लाया, 'डोगी...डोगी... नानिया दिया लत्ता जो खाई लै...' 'नी खाणी दादिया दी लत...नी खाणी दादिया दी लत... हलां तूं मेरिया दादिया जो इंजां ग्ला दा...।'

पोतरूये रोंदें रोंदें एही रट लगाई छड्डी कने दादिया दी लत छातिया ने लगाई लगई। धयोतरूयें खाणे दी रट लगाई कने पोतरूयें नी खाणे दी...। ध्योतरू कने पोतरूये दिया गल्ला जो सुणि मणसां दे मने च झटका लग्गा। शायद तिसा दे मने दी कोई बंद खिड़की अचानक खुली गइयो थे। तिन्ने इक्की नजरें मूंडे चुक्यो ध्योतरूये जो दिख्या फिरि जमीना च बैठयो पोतरूये जो, जिन्नि हाल्तियें भी लत्ता जो पकड़ी कुत्ते जो मचूच बटियो थी। मणसां दूई जो दिखि पोतरूये दे सिरे पर हथ फेरया।

● अमर तनौत्रा

वाकनाघाट में होगी सूचना प्रौद्योगिकी पार्क की स्थापना

हिमाचल प्रदेश के सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा गत दिनों नई दिल्ली में 'स्टेक होल्डर्स' की बैठक आयोजित की गई जिसमें प्रदेश के सोलन जिला के वाकनाघाट में लगभग 65 एकड़ भूमि पर सार्वजनिक-निजी भागीदारी में प्रस्तावित एकीकृत सूचना प्रौद्योगिकी पार्क की स्थापना के बारे में चर्चा की गयी। एस.आर. कन्स्ट्रक्शन लिमिटेड, टी.डी.आई. इन्फ्रॉस्ट्रक्चर, महिन्द्रा वर्ल्ड सिटी, लारसन एण्ड टयूब्रो, जे.पी. कन्स्ट्रक्शन, सी. एण्ड. सी. कन्स्ट्रक्शन, एलडिको, ई-टैक आई.एन.सी., आई.डी.ई.बी. प्रोजेक्ट्स जैसी देश की अनेक प्रख्यात कंपनियों ने बैठक में भाग लिया।

प्रधान सचिव सूचना प्रौद्योगिकी श्री बी.के. अग्रवाल ने बैठक को सूचित किया कि प्रदेश सरकार राज्य में पर्यटन क्षेत्र के विकास के प्रति वचनबद्ध है। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश को सर्वांगीण उपलब्धियों एवं मैक्रो इकानॉमी के लिए देश का 'फास्टैस्ट मूवर स्टेट' तथा वर्ष 2003-09 की अवधि के लिए निवेश के लिए 'फास्टैस्ट मूवर स्टेट' घोषित किया गया है। इसके अतिरिक्त हिमाचल प्रदेश को देश के बड़े राज्यों में शिक्षा, स्वास्थ्य, निवेश एवं मैक्रो इकानॉमी के लिए भी देश का सर्वश्रेष्ठ राज्य घोषित किया गया है। उन्होंने कहा कि मानव विकास सूचक में उच्च स्तर प्राप्त करने के बाद प्रदेश सूचना प्रौद्योगिकी जैसे प्रदूषण रहित एवं पर्यावरण मित्र उद्योगों को प्रोत्साहित कर आर्थिक वृद्धि का प्रयास कर रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी पार्क के प्रारूप की चर्चा करते हुए श्री अग्रवाल ने कहा कि इसका मुख्य उद्देश्य प्रदेश में सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग को बेहतर पर्यावरण सुनिश्चित बनाने के साथ-साथ इस पार्क में रोजगार प्राप्त करने वाले लगभग 25 हजार से अधिक लोगों को आवासीय सुविधाएं प्रदान करना है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार इस पार्क को विकसित करने वाले निवेशकों को सड़क, पेयजल तथा विद्युत आपूर्ति जैसी मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध करवायेगी, जिस पर 50 करोड़ रुपये से अधिक की राशि व्यय की जाएगी तथा इस पर निर्माण कार्य आरंभ हो गया है।

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल हमीरपुर में 'प्रशासन जनता के द्वार' कार्यक्रम में जन समस्याओं को निपटारा करते हुए

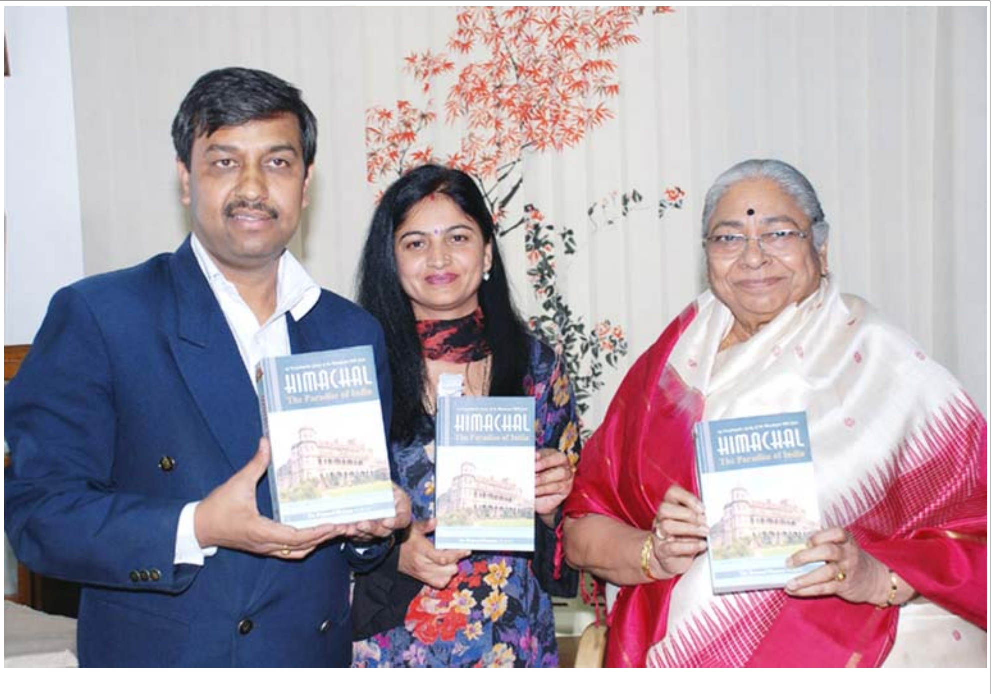

'हिमाचल-द पैराडाइज़ ऑफ इंडिया' पुस्तक का विमोचन

राज्यपाल श्रीमती प्रभा राव ने गत दिनों राजभवन शिमला में डॉ. प्रमोद शर्मा द्वारा लिखित पुस्तक 'हिमाचल-द पैराडाइज़ ऑफ इंडिया' का विमोचन किया। राज्यपाल ने आशा व्यक्त की कि पुस्तक पाठकों के लिए लाभदायक सिद्ध होगी। इस पुस्तक में लगभग 700 चित्रों का समावेश कर पुस्तक को जीवंत स्वरूप देने के प्रयास किए गए हैं।

डॉ. प्रमोद शर्मा ने कहा कि इस पुस्तक को 6 भागों में बांटा गया है, जिसमें भूगोल, इतिहास, समाज, अर्थ व्यवस्था, योजना एवं विकास तथा प्रशासन और लोकतांत्रिक व्यवस्था शामिल है। पुस्तक में कुल 102 अध्याय हैं। 700 पृष्ठों वाली इस पुस्तक में हिमाचल प्रदेश से सम्बन्धित 700 दुर्लभ चित्रों के साथ 7000 प्रश्नोत्तरों के रूप में जानकारी जुटाई गई है।

पंचायत उपचुनावों की अधिसूचना जारी

हिमाचल प्रदेश निर्वाचन आयोग ने हिमाचल प्रदेश पंचायती राज अधिनियम 1994 की धारा 160 तथा हि.प्र. पंचायती राज (निर्वाचन) नियम 1994 के नियम 32 के अंतर्गत शक्तियों का प्रयोग करते हुए प्रदेश की पंचायत राज संस्थाओं के रिक्त पदों के लिए उप चुनाव आयोजित करने का कार्यक्रम घोषित किया है। यह जानकारी देते हुए निर्वाचन आयोग के एक प्रवक्ता ने गत दिनों शिमला में बताया कि ग्राम पंचायतों, पंचायत समितियों तथा जिला परिषद के पदाधिकारियों के लिए नामांकन पत्र संबंधित जिला निर्वाचन अधिकारी पंचायत द्वारा नियुक्त अधिकारी के सम्मुख 5, 6 तथा 7 अक्तूबर, 2009 को प्रात: 10 बजे से सायं 3 बजे तक भरे जा सकते हैं। उन्होंने कहा कि नामांकन पत्र की जांच 8 अक्तूबर, 2009 को प्रात: 10 बजे से की जाएगी।

प्रवक्ता ने कहा कि उम्मीदवार 12 अक्तूबर, 2009 को 10 बजे प्रात: से सायं 3 बजे तक अपने नामांकन पत्र वापिस ले सकते हैं। उन्होंने कहा कि चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों की सूची 12 अक्तूबर, 2009 को नामांकन पत्र वापिस लेने के समय के समाप्त होने के तुरंत बाद उन्हें आबंटित चुनाव चिन्ह के साथ प्रदर्शित की जाएगी।

उन्होंने कहा कि मतदान केन्द्रों की सूची 5 अक्तूबर, 2009 को या इससे पूर्व प्रकाशित की जाएगी। उन्होंने कहा कि यदि आवश्यक हुआ तो मतदान 23 अक्तूबर, 2009 को प्रात: 8 बजे से सायं 4 बजे तक आयोजित किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि ग्राम पंचायत के सदस्यों, उप प्रधानों एवं प्रधानों के लिए आयोजित चुनावों की मतगणना ग्राम पंचायत मुख्यालय में चुनाव समाप्त होने के तुरंत बाद की जाएगी, जबकि पंचायत समिति तथा जिला परिषद के सदस्यों के मतों की गणना सम्बन्धित खंड मुख्यालय पर 25 अक्तूबर, 2009 को की जाएगी। उन्होंने कहा कि मतगणना एक बार आरंभ होने के बाद जब तक पूरी नहीं हो जाएगी, जारी रहेगी।

प्रवक्ता ने कहा कि ग्राम पंचायत के सदस्यों, उप प्रधानों तथा प्रधानों के चुनाव परिणाम मतगणना समाप्त होने के तुरंत बाद घोषित किए जाएंगे, जबकि पंचायत समिति के सदस्यों के लिए मतदान के परिणाम खंड मुख्यालय पर मतगणना के समाप्त होने के बाद घोषित किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि जिला परिषद के सदस्यों के लिए चुनाव परिणाम की घोषणा हिमाचल प्रदेश पंचायती राज (निर्वाचन) नियम 1994 के नियम 75 (VI) के अनुरूप किया जाएगा। मतदान की प्रक्रिया 28 अक्तूबर, 2009 को सम्पन्न होगी।

बीज उपचार के लिए राज्यव्यापी अभियान प्रथम अक्तूबर से

खरीफ फसलों में रोगों से छुटकारा दिलाने के लिए शत-प्रतिशत बीजोपचार के राष्ट्रव्यापी अभियान की सफलता को देखते हुए भारत सरकार के कृषि मंत्रालय द्वारा इसे रबी फसलों में भी जारी रखने का फैसला किया गया है। इस अभियान को देश में 'राष्ट्रीय टीकाकरण व पल्स पोलियो' अभियान की तर्ज़ पर चलाया जा रहा है, जिसके अंतर्गत विभाग द्वारा रबी मौसम में 30 हजार क्विंटल बीज उपचारित करने के बाद किसानों में वितरित किये जाएंगे, जिस पर 13.50 लाख रुपये व्यय होंगे। किसानों को अपने बीज उपचारित करने के लिए 100 प्रतिशत सहायता दी जाएगी। इसके अंतर्गत 30 हजार क्विंटल बीज उपचारित किया जायेगा, जिस पर 27.00 लाख रुपये व्यय किए जायेंगे।

कृषि विभाग द्वारा हिमाचल प्रदेश में 1 से 15 अक्तूबर, 2009 तक यह अभियान चलाया जाएगा, जिसके संचालन के लिए राज्य/जिला/खंड स्तर पर बीजोपचार अभियान समन्वय समितियों का गठन किया गया है जिसके दौरान किसान प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया जायेगा।

प्रशासन जनता के द्वार

(पृष्ठ एक का शेष) बागबानी कार्ड संबंधी औपचारिकताएं पूरी कर स्थल पर ही मुहैया करवाए जा सकेंगे।

इस अवसर पर कुड़ क्षेत्र की संतोष कुमारी ने मुख्य मंत्री को अपनी दिल की बीमारी के बारे में बताते हुए कहा कि उसके परिवार की आय का कोई साधन नहीं है, पहले ही उसके दिल का एक बार आप्रेशन हो चुका है और करीब उसके 50,000 के मेडिकल के बिल भुगतान के लिए लंबित हैं।

उसने आर्थिक सहायता के लिए गुहार लगाते हुए मुख्य मंत्री को बताया कि उसके 18 वर्षीय बेटे अनिल कतना को टांडा मैडिकल कालेज में एमबीबीएस प्रशिक्षण में प्रवेश मिल चुका है और उसकी बेटी दीक्षा को बहुतकनीकी महाविद्यालय, कंडाघाट में कम्प्यूटर साईंस में दाखिला मिला है। परंतु उसकी आय का कोई भी स्थायी साधन न होने के चलते उसे बच्चों को पढ़ाने एवं अपनी चिकित्सा के मामले में कई दिक्कतें आ रही हैं।

मुख्य मंत्री ने उसे उचित सहायता का आश्वासन दिया।

नाथपा झाकड़ी जल विद्युत स्टेशन से बिजली का रिकार्ड उत्पादन

सतलुज जलविद्युत निगम लिमिटेड के नाथपा झाकड़ी पावर स्टेशन ने 21 सितम्बर, 2009 को 5000 मिलियन यूनिट बिजली उत्पादन का आंकड़ा पार कर लिया है। यह रिकार्ड बिजली उत्पादन गत एक अप्रैल से 21 सितम्बर, 2009 की अवधि के मध्य पिछले वर्ष की तुलना में 15 दिन पहले किया गया है। इक्विटी में हिस्सेदार होने के तौर पर हिमाचल प्रदेश को इस जलविद्युत स्टेशन से 12% बिजली नि:शुल्क मिलने के अतिरिक्त बस बार दरों पर उत्पादित बिजली में से और 25% हिस्सा प्राप्त होता है।

संयुक्त वन प्रबन्धन समितियां गठित

वन मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा ने गत दिनों शिमला में वन विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठक आयोजित कर प्रदेश में वनों को आग से बचाने के लिए किए गए प्रबन्धों की समीक्षा की। प्रदेश में विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत संयुक्त वन प्रबन्धन समितियां गठित करने के निर्देश दिए। ताकि जंगलों को आग से बचाया जा सके।

वन मंत्री ने वनों को आग से बचाने के लिए मध्यप्रदेश द्वारा किए गए उपायों एवं अनुभवों को हिमाचल प्रदेश में प्रयोग में लाने पर बल दिया ताकि प्रदेश की बहुमूल्य वन सम्पदा को आग से बचाया जा सके।

उन्होंने विभाग के अधिकारियों को मध्यप्रदेश के इस मॉडल का अध्ययन करने के निर्देश दिए तथा अक्तूबर माह के मध्य तक वन अरण्यपाल तथा वनमंडलाधिकारियों की बैठक आयोजित करने के भी निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सरकार वनों के संरक्षण के प्रति वचनबद्ध है।

मुख्य मंत्री राहत कोष में अंशदान

गगरेट विशाल ट्रक ऑपरेटर यूनियन ने गत दिनों गोंदपुर बनेहड़ा की जनसभा में मुख्य मंत्री राहतकोष के लिए 51 हजार रुपये का चैक मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल को भेंट किया। गोंदपुर बनेहड़ा सीनियर सेकंडरी स्कूल के स्टॉफ ने भी 11 हजार रुपये का चैक मुख्य मंत्री राहतकोष के लिए भेंट किया।

इस अवसर पर मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने कहा है कि मुख्य मंत्री राहतकोष में दिया गया पैसा पीड़ित मानवता की सेवा और असहाय लोगों की मदद में व्यय किया जाता है। उन्होंने कहा कि इस अंशदान से कई रोगियों को नया जीवन मिला है।

Corrigendum

Please read the essential qualification of Ward Boy/ Class-IV as Middle instead of Matric as appeared in the advertisement given by this office and published in the Giriraj on 23-29 September, 2009.

Sd/-
Member Secretary,
Rogi Kaylyan Samiti,
Reginal Hospital, Solan
No. 246-48, dt. 25.9.09

चैलचौक में विनियमित...

(पृष्ठ एक का शेष) गोहर-देवीगढ़ सड़क के लिए 2.30 करोड़ रुपये स्वीकृत किए गए हैं। मुख्य मंत्री ने पतीकरी-चालिट- मुखरी सड़क के लिए 10 करोड़ रुपये स्वीकृत किये। उन्होंने बासा में किसान भवन के निर्माण के लिए 2 लाख रुपये की अतिरिक्त राशि भी स्वीकृत की जिसके लिए पहले भी 5 लाख रुपये स्वीकृत किए जा चुके हैं। उन्होंने मेला समिति खेवड़ के लिए 25 हजार रुपये की घोषणा की। ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री श्री जयराम ठाकुर ने इस अवसर पर अपने संबोधन में कहा कि हिमाचल प्रदेश के नरेगा के कार्यान्वयन में सर्वश्रेष्ठ राज्य घोषित किया गया है। उन्होंने कहा कि इस योजना के अंतर्गत गत वर्ष 332 करोड़ रुपये व्यय किए गए हैं जबकि इस वर्ष 500 करोड़ रुपये व्यय किए जा रहे हैं।

विधायक श्री दिले राम ने क्षेत्र के विकास में विशेष रुचि लेने के लिए मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि सरकार क्षेत्र में सड़क निर्माण एवं पेयजल आपूर्ति योजनाओं को विशेष प्राथमिकता दे रही है।

भूल सुधार

गिरिराज साप्ताहिक के अंक 16-22 सितम्बर, 2009, पृष्ठ 5 पर लेख 'बेहतर कृषि उपायों से सब्जियों की अधिक पैदावार व उत्तम गुणवत्ता' के लेखक का नाम डॉ. संजीव चड्ढा के स्थान डॉ. संजय चड्ढा पढ़ा जाए। -**सम्पादक**

नाम परिवर्तन

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मैं नागेन्द्र कुमार सुपुत्र श्री बेली राम निवासी गांव नोशा डाकखाना उरला तहसील पद्दर जिला मण्डी, हिमाचल प्रदेश ने अपना नाम बदल कर नागेश्वर सिंह रख लिया है। अत: भविष्य में मुझे इस नये नाम से जाना जाए।

मुख्य मंत्री ने रखी पालमपुर के समीप तकनीकी विश्वविद्यालय की आधारशिला

निर्धन व जरूरतमंद छात्रों को मिलेगी निशुल्क शिक्षा

मुख्य मंत्री ने गत दिनों पालमपुर के समीप पतियारखड़ गांव में श्री साईं तकनीकी विश्वविद्यालय की आधारशिला रखी। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि आगामी 5 वर्षों में लगभग 100 करोड़ रुपये व्यय करके इस विश्वविद्यालय की स्थापना की जाएगी। उन्होंने कहा कि प्रारंभ में इस विश्वविद्यालय ने आगामी शैक्षणिक सत्र से कम्प्यूटर साईंस, इलैक्ट्रॉनिक्स एवं कम्युनिकेशन, सिविल इंजीनियरिंग, सूचना प्रौद्योगिकी, मकैनिकल इंजीनियरिंग के अतिरिक्त फार्मेसी में 3 पाठ्यक्रम, प्रबन्धन में लगभग 4 पाठ्यक्रम, बी.बी.ए., बी. एस.सी., आई.टी. तथा शिक्षा एवं एप्लाईड साईंस एवं आर्टस् के पाठ्यक्रम आरंभ किए जाएंगे।

प्रो. धूमल ने पालमपुर में इस विश्वविद्यालय की स्थापना करने के लिए श्री साईं विश्वविद्यालय के कुलपति श्री एस.के. पुंज के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने प्रदेश के निर्धन बच्चों को इस विश्वविद्यालय में नि:शुल्क शिक्षा प्रदान करने की घोषणा की भी सराहना की।

सांसद तथा पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री शांता कुमार ने इस अवसर पर अपने संबोधन में प्रदेश के सर्वांगीण विकास के लिए राज्य सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की, जिसके परिणामस्वरूप प्रदेश को देश का अग्रणी राज्य घोषित किया गया है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में जलविद्युत उत्पादन की अपार संभावनाएं हैं, जिससे राज्य की आर्थिकी में आशातीत बदलाव आ सकता है।

शिक्षा मंत्री श्री आई.डी. धीमान ने शिक्षा तथा अन्य क्षेत्रों में देश भर में सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त करने के लिए प्रदेशवासियों को बधाई दी।

श्री साईं ऐजुकेशनल सोसायटी के अध्यक्ष श्री एस. के. पुंज ने कहा कि विश्वविद्यालय में प्रदेश के निर्धन एवं जरूरतमंद छात्रों को नि:शुल्क शिक्षा उपलब्ध करवायी जाएगी। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में सभी व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में शिक्षा उपलब्ध करवायी जाएगी।

इससे पूर्व, मुख्य मंत्री ने नागरिक अस्पताल पालमपुर में 6.70 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित बाह्य रोगी विभाग खंड का लोकार्पण किया जिसमें सी.टी. स्कैन, अल्ट्रासाउंड, ई. सी.जी., आपातकालीन सेवाएं एवं माइनर आप्रेशन थियेटर की सुविधा के अतिरिक्त वर्तमान 100 बिस्तरों वाले 10 अतिरिक्त बिस्तर शामिल किए गए हैं ताकि क्षेत्र की 2.5 लाख जनसंख्या को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध हो सकें। मुख्य मंत्री ने इस अवसर पर पालमपुर में 3.06 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित फल एवं सब्जी विपणन यार्ड का भी लोकार्पण किया। इसमें 24 दुकानें, कोल्ड स्टोर, ग्रेडिंग तथा पैकिंग हॉल, कैंटीन, अतिथि गृह एवं पार्किंग जैसी मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध करवायी गयी हैं। प्रथम चरण में 14 दुकानें आबंटन के लिए तैयार हैं तथा 10 दुकानों का शीघ्र ही निर्माण किया जाएगा, जिसपर 1 करोड़ रुपये की अतिरिक्त लागत आएगी। कृषि उत्पाद मंडी समिति कांगड़ा ने वर्ष 2008-09 के दौरान 2.91 करोड़ रुपये की आय सृजित की है। इस राशि को समिति द्वारा मंडी, प्रापण केन्द्रों, सड़क निर्माण तथा इनके रखरखाव पर व्यय किया जा रहा है।

मुख्य मंत्री ने पालमपुर के निकट मैंझा गांव में बहाव सिंचाई योजना 'संसारचंद कूहल' की भी आधारशिला रखी, जिसका निर्माण 170.50 लाख रुपये की लागत से किया जाएगा और इससे आसपास के गांवों की 199 हेक्टेयर भूमि को सिंचाई सुविधा उपलब्ध होगी। मुख्य मंत्री ने महिला औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान पालमपुर में अतिरिक्त आवासीय सुविधा की भी आधारशिला रखी। इसके निर्माण तथा अन्य फर्नीचर एवं उपकरणों की खरीद पर 2.5 करोड़ रुपये व्यय किए जाएंगे।

विधानसभा अध्यक्ष श्री तुलसी राम व पंजाब के शिक्षा मंत्री श्री मोहन लाल भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

सिंचाई एवं जन स्वास्थ्य मंत्री श्री रविन्द्र सिंह रवि, खाद्य एवं आपूर्ति मंत्री श्री रमेश धवाला, उद्योग मंत्री श्री किशन कपूर, स्वास्थ्य मंत्री डॉ. राजीव बिन्दल, विधायक कैप्टन आत्मा राम, श्री राकेश पठानिया, श्री विपिन परमार, श्री प्रवीण शर्मा, एवं श्री संजय चौधरी भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल कांगड़ा जिला के पालमपुर में फल एवं सब्जी उपमण्डी का लोकार्पण करते हुए। साथ हैं सांसद श्री शांता कुमार।

ऊना के मटाहणी में 59 लाख की लागत से बनेगा विज्ञान खण्ड

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने कहा कि राज्य सरकार सड़क, शिक्षा तथा स्वास्थ्य क्षेत्र को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान कर रही है और प्रदेश के समग्र एवं संतुलित विकास को ध्यान में रखकर अनेक योजनाएं एवं कार्यक्रम कार्यान्वित किए जा रहे हैं। मुख्य मंत्री ने यह जानकारी गत दिनों हमीरपुर के समीप मटाहणी में राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला में 59 लाख रुपये की लागत से बनने वाले विज्ञान खंड की आधारशिला रखने के उपरान्त 'प्रशासन जनता के द्वार पर' कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए दी। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर पाठशाला परिसर में विकास में जन सहयोग योजना के तहत बनाए गए कमरों का लोकार्पण भी किया।

प्रो. धूमल ने कहा कि मटाहणी-शस्त्र सड़क के लिए 128.5 लाख रुपये, दगनेड़ी सम्पर्क मार्ग के लिए 87.78 लाख तथा दड़ूही से बुरनाड़ सड़क निर्माण के लिए 98.24 लाख रुपये स्वीकृत किए गए हैं। उन्होंने खग्गल में अम्बेदकर भवन बनाने के लिए 10 लाख रुपये, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला मटाहणी में चार दिवारी के निर्माण के लिए 5 लाख रुपये और स्थानीय पंचायत में सामुदायिक भवन के निर्माण के लिए 2 लाख रुपये देने की घोषणा भी की। उन्होंने कहा कि खग्गल में शीघ्र ही आयुर्वेदिक औषधालय स्थापित कर दिया जाएगा। शिक्षा मंत्री श्री ईश्वर दास धीमान ने इस अवसर पर कहा कि वर्तमान वित्त वर्ष में शिक्षा क्षेत्र के लिए 2094 करोड़ रुपये आबंटित किए गए है। स्थानीय विधायक श्रीमती उर्मिल ठाकुर ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किये।

मुख्य मंत्री ने इस अवसर पर ब्रहमी देवी, सावित्री देवी, पृथी चन्द, पवन आह्लुवालिया, प्रेमचन्द, रतन चन्द, प्रेम शर्मा, रतन वर्मा तथा मटाहणी पाठशाला के प्राचार्य को स्कूल भवन के निर्माण में आर्थिक तथा सराहनीय सहयोग के लिए सम्मानित किया।

एकीकृत जलागम प्रबन्धन कार्यक्रम के तहत 138 करोड़ की परियोजनाएं स्वीकृत

मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने गत दिनों शिमला में बताया कि एकीकृत जलागम प्रबन्धन कार्यक्रम के अंतर्गत संचालन समिति भारत सरकार द्वारा हिमाचल प्रदेश के 10 जिलों क्रमशः जिला बिलासपुर, चंबा, हमीरपुर, कांगड़ा, किन्नौर, मण्डी, शिमला, सिरमौर तथा ऊना में वर्षा पर आधारित 91885 हैक्टेयर क्षेत्र के विकास पर 138 करोड़ रुपये की परियोजनाओं के कार्यान्वयन की अनुमति प्रदान की है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत 90 प्रतिशत धनराशि भारत सरकार से प्राप्त होगी तथा शेष 10 प्रतिशत धनराशि राज्य हिस्से के रूप में प्रदेश सरकार द्वारा वहन की जायेगी।

मुख्य मंत्री ने कहा कि चयनित क्षेत्रों को 4 से 7 वर्षों की अवधि के भीतर जन समुदाय के सहयोग से विकसित किया जायेगा। जलागम क्षेत्रों में प्राकृतिक संसाधनों का प्रबन्धन इस प्रकार किया जाएगा जिससे जलागम क्षेत्र में आने वाले सभी लोगों के जीविकापार्जन में बढ़ौतरी सुनिश्चित हो सके। मुख्यत: जल संरक्षण, नमी संरक्षण, पौधरोपण, कृषि व बागवानी विकास तथा अतिरिक्त रोजगार अर्जन से सम्बन्धित गतिविधियों को प्राथमिकता के आधार पर लिया जाएगा।

अति विशिष्ट व्यक्तियों के लिए दौरों के दौरान यातायात सम्बन्धी दिशा निर्देश

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने गत दिनों हमीरपुर में प्रशासनिक तथा पुलिस अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि वी.वी.आई.पी. मूवमैंट के चलते लोगों को किसी भी तरह की असुविधा नहीं होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि यह निर्देश पूरे राज्य में लागू होंगे। मुख्य मंत्री ने कहा कि प्राय: देखा गया है कि अति महत्वपूर्ण व्यक्तियों के प्रस्तावित कार्यक्रम को देखते हुए काफी समय पहले ही यातायात रोक दिया जाता है। वी.वी.आई.पी. मूवमैंट को देखते हुए यातायात, कुछ समय पूर्व ही रोका जाना चाहिए, ताकि लोगों को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

प्रत्येक गांव में सड़क शिक्षा स्वास्थ्य व रोजगार सुविधाओं को प्राथमिकता

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने कहा कि प्रदेश सरकार गांवों से शहरों की ओर हो रहे पलायन को रोकने के लिए हर गांव में सड़क, शिक्षा, स्वास्थ्य व रोजगार सुविधाएं उपलब्ध करवाने की दिशा में ठोस कदम उठा रही है तथा ग्रामीण क्षेत्रों में विकास कार्यों को विशेष प्राथमिकता प्रदान कर रही है। यह जानकारी मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने गत दिनों ऊना जिला के गगरेट विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत गोंदपुर बनेहड़ा में 51 लाख 44 हजार रुपये की लागत से बने सीनियर सेकंडरी स्कूल के विज्ञान खण्ड का उद्घाटन करने के बाद एक जनसभा को संबोधित करते हुए दी।

मुख्य मंत्री ने कहा कि बेहतर सुविधाओं की तलाश में गांवों से लोग शहरों की ओर रुख करते हैं और जब गांवों में शहरों जैसी सुविधाएं मुहैया होंगी तो वे शहरों की ओर पलायन नहीं करेंगे। उन्होंने कहा कि ग्रामीण विकास को सरकार ने सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान की है क्योंकि प्रदेश की 90 फीसदी से अधिक आबादी गांवों में रहती है।

उन्होंने कहा कि जिला ऊना में स्वां नदी बाढ़ प्रबंधन एवं एकीकृत भूमि विकास परियोजना के द्वितीय चरण के लिए 235.52 करोड़ रुपये व्यय किये जा रहे हैं। इस परियोजना के निर्माण से 5 हजार हेक्टेयर क्षेत्र की भूमि उपचारित होगी। उन्होंने कहा कि जिला में 160 करोड़ रुपये लागत की स्वां नदी एकीकृत जलागम प्रबंधन परियोजना भी क्रियान्वित की जा रही है। जिला के शत-प्रतिशत गांवों को पेयजल सुविधा प्रदान की जा चुकी है। सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान के तहत जिला 235 ग्राम पंचायतों में से 140 पंचायतें खुले से शौचमुक्त घोषित हो चुकी हैं। जिला की 234 पंचायतें सड़क सुविधा से जुड़ चुकी हैं।

मुख्य मंत्री ने इस अवसर पर गोंदपुर बनेहड़ा सीनियर सेकंडरी स्कूल के पुराने भवन के जीर्णोद्धार के लिए दस लाख रुपये और सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए 5 हजार रुपये देने की घोषणा की।

उन्होंने गोंदपुर-बनेहड़ा गांव के लिए एक ट्यूबवैल स्वीकृत करने के साथ गांव के स्कूल की चारदीवारी व स्टेडियम का निर्माण 'पाइका' के तहत करवाने की भी घोषणा की। उन्होंने कहा कि गगरेट के अंबोटा में एक बहुतकनीकी संस्थान पहले ही कार्यरत है तथा गगरेट में इसी साल से खुले नए आई.टी.आई में पांच नए ट्रेड शुरू किए गए हैं।

इस अवसर पर गगरेट के विधायक व जिला भाजपा अध्यक्ष श्री बलवीर चौधरी ने भी संबोधित किया और मुख्य मंत्री का गगरेट क्षेत्र के विकास के लिए उदारतापूर्वक धन मुहैया करवाने का आभार व्यक्त किया।

मुख्य संसदीय सचिव श्री सतपाल सिंह सत्ती व श्री वीरेन्द्र कंवर, पूर्व मंत्री श्री प्रवीण शर्मा तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

समस्याओं का समाधान सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा लोगों को जीवन के हर क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवाएं प्रदान करने की संकल्पबद्धता के कारण ही एक प्रतिष्ठित पत्रिका द्वारा किए गए सर्वेक्षण में हिमाचल प्रदेश सर्वश्रेष्ठ राज्य उभर कर आया है और राज्य को सात पुरस्कार मिले हैं। उन्होंने लोगों से प्रदेश सरकार द्वारा उनके कल्याण के लिए चलाई जा रही विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं एवं कार्यक्रमों का भरपूर लाभ उठाने का आग्रह किया। मुख्य मंत्री गत दिनों हमीरपुर जिला चौकी में 421 लाख रुपए की लागत से बनने वाली अमरोह-छबोट- चौकी उठाऊ पेयजल योजना का शिलान्यास करने के उपरांत उपस्थित जन समुदाय को संबोधित कर रहे थे। इस योजना से 42 बस्तियों के करीब 11,000 लोग तथा छात्र लाभान्वित होंगे। ब्यास नदी पर बनने वाली इस योजना से पेयजल वितरण के लिए 16.7 किलोमीटर लंबी पाईप लाईन बिछाई जाएगी।

idk'kd% ch-Mh- 'kek] fun'kd] lpuk ,o tu lEidZ foHkkx] fg-i- f'keyk&171002] eqnzd% jkthoo dekj 'kdj] fu;=d] eqnz.k rFkk ys[ku lkexzh foHkkx] f'keyk&171005] Qksu% 2830378] i/kku lEiknd% ch-Mh- 'kek] ofj"B lEiknd% vkj-,l- uxh] lEiknd% ;knfoUnj flag pkgku] dk;kZy;% fg-i- eqnz.kky; ifjlj] f'keyk&171005] Qksu o QSDl% 2633145] bZ&esy% girirajhp@gmail.com., girirajhp@yahoo.co.in OR girirajweekly 1978 @yahoo.co. in ikfIr LFkku% fxfjjkt dk;kZy;A ¼fxfjjkt lkIrkfgd esa idkf'kr ys[kksa esa O;Dr fopkjksa ls lEiknd h; lgefr vfuok;Z ugha½